

डिसेंबर २०२२

हर महिने के १०/११ तारीख को शायी (प्रसिद्ध) होता है।

शुमारा हदिया : २५ / -

- संस्थापक
हाजी ए.आय.मुजावर
- संपादिका
प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला
७८४९९३७३९३
- मांडणी सजावट
रेहान ग्राफीक्स, सांगली.
९९२३४३७३६७

ध्यान से पढीए

सालाना मुल्य केवल २५०/- रु.
(सालाना विशेषांक के साथ)

- सालाना मेम्बरशीप इधर-उधर
किसी नाम पे मत भेजिए।

मुस्तफा लाईफटाईम मेम्बरशीप
४०००रु/-

इस बैंक खातेपर कहींसे भी फिस जमा
कर सकते है -

* सालाना मेम्बरशीप फिस रु. २५०/-
नेशनलाईज बैंक के चेक पर

SBI A/c No.20240440743

IFSC COD : SBIN0008234

Google Pay No. 7841937393



दिन-दुनिया की मालूमात को कामयाबी की ओर
ले जानेवाला इस्लामी माहनामा (डायजेस्ट)

मुस्तफा
स्व.अ.स

* साल १५ * शुमारा १२ * जमादिल अक्वल * हिजरी १४४४

• आईना •

- १) रसूलुल्लाह का दुसरा सफर ७
- २) जन्नत के मनाजीर १०
- ३) मियाँ बीवी रफिक बने.....१६
- ४) कलिसा का शासन १८
- ५) फिरऔन की लाश.....२१
- ६) करिअरनामा.....२३
- ७) उश्र क्या है?.....२४
- ८) मिडिया और मदरसे.....२७
- ९) अच्छे रिश्ते ३२

संस्थापक:

- : खतो - किताबात का पता : -

संपादिका:

ए. आय. मुजावर, संपादक - मुस्तफा

प्रो. शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला

५७९, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.

५९८, सिव्हील हॉस्पिटल रोड, साऊथ शिवाजीनगर, सांगली.

email : mustafathemagazine@gmail.com , 7841937393

मुस्तफा में छपनेवाली कुरआने करीम की आयतें और अहादीसे नबवी स० चाहे वह अस्ल हो या तर्जुमा,
अपनी दीनी मालुमात में इजाफे के लिए छापी जाती है, इसीलिए उनका एहताराम आपपर फर्ज है।
लिहाजा मुस्तफा के अंको और पन्नोंको बेहुरमती से महफूज रखिए।

मुस्तफा

3

डिसेंबर २०२२

अठारह (१८) बातें

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब रह० कहते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रजि० ने लोगों के लिए अठारह बातें मुक़र्रर कीं जो सब की सब हिक्मत व दानाई की बातें थीं। उन्होंने फ़रमाया:

१. जो तुम्हारे बारे में अल्लाह की नाफ़रमानी करे, तुम उसे उस जैसी और कोई सजा नहीं दे सकते कि तुम उसके बारे में अल्लाह की इताअत करो।
२. और अपने भाई की बात को किसी अच्छे रुख की तरफ़ ले जाने की पूरी कोशिश करो। हाँ, अगर वह बात ऐसी हो कि उसे अच्छे रुख की तरफ़ ले जाने की तुम कोई सूरत न बना सको तो और बात है।
३. और मुसलमान की जबान से जो बोल भी निकला है और तुम उसका कोई भी ख़ैर का मतलब निकाल सकते हो तो उससे बुरे मतलब का गुमान मत करो।
४. जो आदमी खुद ऐसे काम करता है जिससे दूसरों को बदगुमानी का मौक़ा मिले तो वह अपने से बदगुमानी करनेवाले को हरगिज़ मलामत न करे।
५. जो अपने राज़ को छुपाएगा, इख़्तियार उसके हाथ में रहेगा।
६. सच्चे भाइयों के साथ रहने को लाज़िम पकड़ो। उनके साथ—ए—ख़ैर में ज़िंदगी गुज़ारो क्योंकि वुसअत और अच्छे हालात में वे लोग तुम्हारे लिए ज़ीनत का ज़रिया और मुसीबत में हिफ़ाज़त का सामान होंगे।
७. हमेशा सच बोलो, चाहे सच बोलने से जान ही चली जाए।
८. बेफ़ायदा और बेकार कामों में न लगे।
९. जो बात अभी पेश नहीं आई उसके बारे में मत पूछो, क्योंकि जो पेश आ चुका है उसके तकाज़ों से ही कहाँ फ़ुरसत मिल सकती है।
१०. अपनी हाज़त उसके पास न ले जाओ जो यह नहीं चाहता कि तुम उसमें कामयाब हो जाओ।
११. झूठी क़सम को हल्का न समझो, वरना अल्लाह तुम्हें हलाक कर देगा।
१२. बदकारों के साथ न रहो वरना तुम भी उनसे बदकारी सीख लोगे।
१३. अपने दुश्मन से अलग रहो।
१४. अपने दोस्त से भी चौकन्ने रहो, लेकिन अगर वह अमानतदार है तो फिर इसकी ज़रूरत नहीं, और अमानतदार सिर्फ़ वही हो सकता है जो अल्लाह से डरनेवाला हो।
१५. कब्रिस्तान में जाकर खुशूअ इख़्तियार करो।
१६. और जब अल्लाह की फ़रमाबरदारी का काम करो तो आजिज़ी और इंकिसारी इख़्तियार करो।
१७. और जब अल्लाह की नाफ़रमानी हो जाए तो अल्लाह की पनाह चाहो।
१८. और अपने तमाम उमूर में उन लोगों से मशविरा किया करो जो अल्लाह से डरते हैं, क्योंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है: खुदा से उसके वही बन्दे डरते हैं जो (उसकी अज़मत का) इल्म रखते हैं। (ह्यातुस सहाबा ९५६०-५६१)



इस्लामी मदरसों की ज़रूरत



आज़ाद हिन्दुस्तान का ख्वाब सबसे पहले मुसलमान उलमा ने देखा। अंग्रेज़ों के खिलाफ जिहाद का फ़तवा शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब देहलवी (रह०) (मौत : १८२४ ई०) ने दिया और उसकी अमली कोशिशों का आगाज़ हज़रत सैय्यद अहमद शहीद (रह०) (१८३१ ई०) ने किया। उन्होंने महाराजा ग्वालियर को खत लिखा और उनको आज़ादी की लड़ाई के लिए आमदा किया। शामली के मैदान में उलमा ने ही अंग्रेज़ों से लड़ाई लड़ी और कुर्बानियां दीं। रेशमी रुमाल तहरीक शेखुल हिन्द की कयादत में चली। गांधी जी को इस मैदान में आने की दावत मौलाना मुहम्मद अली जौहर ने दी और फिर आज़ादी की लड़ाई में उलमा कंधे से कंधा मिलाकर लड़ते रहे। इसीलिए आज़ाद हिन्दुस्तान में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद को पहला शिक्षामंत्री बनाया गया।

यह सारी हकीकतें एक तरफ! इस मुल्क के लिए इस्लामी मदरसों की इफादियत इन हकीकतों से खुलकर सामने आती है लेकिन मदरसों की बुनियादी तौर पर जो कीमत है वह मदरसों का वह निज़ामे तालीम है जो इन्सानों को इन्सान बनाता है, बकौल हज़रत मौलाना अली मियां (रह०) के मदरसा सबसे बड़ी कारगाह है, जहां आदमगरी और मरदुमसाजी का काम होता है, जहां दीन के दाई और इस्लाम के सिपाही तैयार होते हैं, मदरसा आलमे इस्लाम का पावर हाउस है, जहां से इस्लामी आबादी बल्कि इन्सानी आबादी में पावर सप्लाई होता है, मदरसा वह कारखाना है जहां से कल्ब व निगाह और ज़हन व दिमाग ढलते हैं, मदरसा वह मुकाम है जहां से पूरी कायनात का इहतिसाब होता है

और पूरी इन्सानी ज़िन्दगी की निगरानी की जाती है, जहां का फरमान पूरी आलम पर नाफ़िज़ है, आलम का फरमान उस पर नाफ़िज़ नहीं।

इस वक़्त अगर अखलाक व इन्सानियत की मुरझाई हुई खेती को कहीं से पानी मिल रहा है तो यह वह इस्लामी मदरसे हैं, वरना आम दानिशगाहों को जिस तरह एक बिज़नेस बना लिया गया है वह दुनिया के सामने है। आम तौर पर कालिजों और यूनिवर्सिटियों में जिस तरह बदअखलाकियों की गर्मबाज़ारी है, वह खुद वहां पढ़ाने वालों और इन्तिज़ाम करने वालों के लिए किसी सूहाने रूह से कम नहीं। कहीं-कहीं इन मदारिस पर भी अब असी दानिशगाहों की छाप पड़ती नज़र आने लगी है, लेकिन अब भी यह मदारिस अपनी बुनियादों के साथ जारी हैं और आज भी वहां अखलाक व मुहब्बत, शराफ़त व इन्सानियत की जो तालीम दी जाती है और तलबा की जिस तर्ज़ पर तरबियत करने की कोशिश होती है, वह इस मुल्क की भी ज़रूरत है और दुनियाए इन्सानियत की ज़रूरत है। अगर यह मदारिस न रह जाएं तो इन्सानियत की खेती खुश्क होने लगे और खुदगर्जी की जो आग लगी है वह सबको जलाकर خاکस्तर कर दे।

ज़रूरत है इन मदारिसे इस्लामिया के तहफ़फ़ुज की उनके अन्दर सही रूह पैदा करने की और बाहर की आलाइशों से उनकी फ़िज़ा को पाक रखने की ताकि यहां से जो पैग़ामे मुहब्बत दुनिया को दिया जाता रहा है वह जारी है और लोगों को सही रास्ता मिलता है। भाईचारा व मुहब्बत हमदर्दी व गमख़वारी इन मदरसों में दिया जाता

रहे और इन्सान को इन्सानियत की वह सौगात मिलती रहे जो शायद कहीं और न मिल सके और हर तरह के माद्री फायदों से बुलन्द होकर सोचने का जो जज्बा यहां पैदा किया जाता है, वह पैदा किया जाता रहे और ज़हन व फिक्र और कल्ब व दिमाग को वह सही गिजा मिलती रहे जो उन मदरिसे इस्लामिया का इन्तियाज़ रहा है।

इस वक़्त उलूमे दीनिया के मदरिस का वजूद मुसलमानों के लिए ऐसी बड़ी नेमत है कि उससे बढ़कर मुतसव्विर नहीं, दुनिया में अगर इस्लाम की बका की कोई सूरत है तो यह मदरसे हैं। (अलइल्म बल उलमा: ८१) (हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी रह०) इन मकतबों को उसी हालत में रहने दो, अगर यह मुल्ला और दरवेश न रहे तो जो कुछ होगा उसे मैं अपनी आंखों से देख आया हूं, अगर हिन्दुस्तान के मुसलमान इन मकतबों के असर से महरूम हो गए तो बिल्कुल उसी तरह जिस तरह हस्पानिया में मुसलमानों की आठ सौ बरस की हुकूमत के बावजूद गरनाता और कर्तबा के खन्डहर और अलहमरा और बाबुल खौतेन के सिवा इस्लाम के पैरों और इस्लामी तहज़ीब के आसार का कोई नक्श नहीं मिलता, हिन्दुस्तान में आगरा के ताजमहल और लाल किले के सिवा मुसलामनों की आठ सौ बरस की हुकूमत और उनकी तहज़ीब का कोई निशान नहीं मिलेगा। (अलइल्म बल उलमा: १/४५५-४५६) (शायर-ए-मब अल्लामा इक़बार रह०)

मुसलमानों की बेमक़सद तालीम के लिए यह

निहायत ही ज़रूरी है कि उनकी क़ौमी दर्सगाहें बिल्कुल अलग हों, जहां उनको ख़ास उनके मज़हबी व क़ौमी मक़ासिद की बिना पर तालीम दी जाए। (मुसलमानों की आइन्दा तालीम: २७) (सैय्यदुताइफ़ा अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी रह०)

मदरसा वह मक़ाम है जहां से पूरी कायनात का एहतिसाब होता है और पूरी इन्सानी ज़िन्दगी की निगरानी की जाती है। इसका ताल्लुक बराहे रास्त नुबुव्वते मुहम्मदी (स०अ०व०) से है जो आलमगीर भी है और ज़िन्दा जावेद भी इसका ताल्लुक उस इन्सानियत से है जो हरदम जवां है, उस ज़िन्दगी से है जो हमावक़त रवां और दवां है, मदरसा दरहकीकत कदीम और जदीद की बहसों से बालातर है, वह तो ऐसी जगह है जहां नुबूब्वते मुहम्मदी की अब्दियत और ज़िन्दगी का नुमू और हरकत दोनों पाए जाते हैं।

(पा जा सुरागे ज़िन्दीगी: ९०) (मुफ़किर-ए-इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी रह०)

इस मुल्क में दीन की बड़ाई का आखिरी ज़रिया दीनी मदरिस ही है। अल्लाह के बन्दो ! दीनी मदरसों के मक़ाम को समझो, अगर उन दीनी मदरसों पर ज़वाल आ गया तो याद रखो ! फिर तुम्हारा मुल्क भी स्पेन बन जाएगा और तुम्हारे बच्चों को कलिमा तैय्यबा और दीन पर बाकी रहने की कोई गारन्टी नहीं रह जाएगी। (तज़किरतुल सिद्दीक: ३७-३८) (आरिफ बिल्लाह मौलाना कारी सिद्दीक अहमद बान्दवी रह०)



वडगांवकर क्लिनिक

फिजीशियन, सर्जन व आयुर्वेद कन्सलटंट

वंध्यत्व, शुक्रजंतूची कमतरता, शुक्रजंतूची हालचाल कमी असणे, एक मूल आहे त्यानंतर प्रेगनन्सी राहत नाही, संबंध ठेवताना येणाऱ्या अडचणी, मासिक पाळीच्या तक्रारी, शीघ्रपतन, प्रसव व प्रसवनंतर योग्य सल्ला व उपचार, लहान मुलांची खतना (मुंज),
उपलब्ध सुविधा: ई.सी.जी, ग्लुकोमीटर, फीटल डॉप्लर

पेठभाग, वालवा, जि. सांगली. मोबा. 9970530505

डॉ. आसिफ ए. मोमीन
B.A.M.S (CCH, CGO)
Reg. No 158800-A-1

डॉ. सौ. अंजुम ए. मोमीन
B.A.M.S (CCH, CGO)
Reg. No. 168235-A



रसूलुल्लाह (स०अ०) का मुल्क-ए-शाम का दूसरा सफ़र



रसूलुल्लाह (स०अ०) ने मुल्क-ए-शाम (हाल में सीरिया) का दूसरा सफर पच्चीस साल की उम्र में किया और यह सफर एक कामयाब व्यापारी की हैसियत से था। बारह साल की उम्र में किए गए तारीखी सफ़र के बाद रसूलुल्लाह (स०अ०) का मुल्क से बाहर का यह दूसरा सफर था। इस दौरान में मुख्तलिफ दिलचस्प घटनाएं भी हुईं जिनसे रसूलुल्लाह (स०अ०) की शख्सियत मक्का वालों के लिए ज्यादा लाभकारी साबित हो गयी थी। फिर भी इस दौरान रसूलुल्लाह (स०अ०) ने तिजारत को आस-पास के इलाके में जारी रखा तथा अरब के मशहूर बाज़ारों में भी गए। रसूलुल्लाह (स०अ०) की इस दौरान समाजी इख्तेलात से कई चीजें वाज़ेह हो गई थीं, यानि आपकी अमानतदारी, पासेवफा, सिद्कगोई, हिल्म व फजल, तवाज़ो व सखावत। यही वजह है कि मक्का के लोग कम उम्र ही में आपको सादिक और अमीन लकब से पुकारने लगे थे और उन्हें खसाएले हमीदा और बुहैशा राहिब के तासुराती कलिमात के पेशनज़र अबूतालिब को भी यकीन था कि उनके भतीजे की शान सबसे निराली है और किसी की गुज़न्द उन्हें कोई नुकसान पहुंचाने वाली नहीं है।

जब रसूलुल्लाह (स०अ०) की उम्र पच्चीस बरस की हुई तो शफीक चचा ने महबूब भतीजे की अज़मत का आफ़ताब उरुज़ पर देखा और उनकी हुनरमन्दी का एतराफ़ हर आम व खास की ज़बान पर पाया और दूसरी तरफ अपनी गुरबत और मुफलिसी पर भी नज़र डाली, जिसके बाद यह ख़्याल हुआ कि भतीजे को कुरैश के काफिले के साथ मुल्के शाम के तिजारती सफ़र पर रवाना कर दिया जाए। परवरदिगार ने भी उनके हाथ में

बड़ी बरकत रखी है, लेकिन माल की इतनी फरावानी न थी कि तिजारत की जा सके। इसीलिए शरीफ व नजीफ भतीजे से मशविरा किया और कहा; भतीजे ! मैं एक मुफलिस शख्स हूं और मुझ पर ज़माने की सितमज़रीफी तुम पर अयां है। मक्का की कहतसाली ने हमारा जो बुरा हाल किया है, उससे भी तुम बखूबी वाकिफ़ हो न हमारे पास कोई ज़रिया-ए-माश है और न कोई वसाएले तिजारत । और अब कुरैश के काफिले का शाम रवाना होने का वक़्त आ चुका है और इस काफिले में हर साल खदीजा बन्ते ख़वीलद का माल भी मुज़ारिबत पर जाता है, जिसका मुनाफा सबसे ज़्यादा होता है। मेरा ख़्याल है कि अगर तुम हज़रत खदीजा रज़ि० के सामने अपनी इस ज़रूरत को बयान करो और उनका माले तिजारत लेकर शाम का सफ़र करो तो बहुत बेहतर है, और मुझे कवी उम्मीद है कि हज़रत खदीजा तुम्हारी बात को हरगिज़ नहीं टालेंगी और वह हर हाल में तुम्हें तरजीह देंगी, गरचे मुझे तुम्हें मुल्के शाम भेजना बिल्कुल अच्छा नहीं लगता, मगर वाक्या यह है कि इसके सिवा हमारे पास कोई और हल भी नहीं है।

रसूलुल्लाह (स०अ०) को अपने महबूब चचा की यह राय बहुत पसंद आयी, मगर गैरत ने यह गवारा न किया कि हज़रत खदीजा तक अपने इस इरादे को दरखास्त सूरत में पेश करें और न ही अल्लाह तआला की तरफ से इसका मौका दिया गया। बल्कि जैसे ही हज़रत खदीजा को किसी खुफ़िया तरीके से चचा-भतीजे के इस मशवरे का इल्म हुआ तो उन्होंने फौरन अपनी तरफ से माल ले जाने की रसूलुल्लाह (स०अ०) से दरखास्त फ़रमाई जिसको रसूलुल्लाह (स०अ०) ने खुशी-खुशी

कुबूल फरमाया। चूंकि हजरत खदीजा रज़ि० मक्का मुकर्रमा में रसूलुल्लाह (स०अ०) के औसाफे हमीदा के चर्चे सुन चुकी थीं, इसलिए उन्होंने यह भी कहा कि मैं मुहम्मद (स०अ०) को उससे ज़्यादा माल अता करूंगी जो दूसरों को देती हूं और साथ ही बतौर मुआविन व खादिम अपने गुलाम मीसरा को भी रवाना किया।

कुरैश का यह मुबारक तिजारती काफिला कुछ ही दिनों में मुल्के शाम पहुंच गया और बसरा की तिजारती मंडी के करीब खेमाज़न हुआ। इसी इलाके में एक ईसाई राहिब की खानकाह थी, जिसका नाम नस्तूर था। शायद यह वही खानकाह थी, जिसमें तेरह साल पहले बुहैरा राहिब से मुलाकात हुई थी और अब इसमें नस्तूर नामी राहिब मुकीम था। उस राहिब ने अपनी खानकाह से देखा कि रसूलुल्लाह (स०अ०) एक तारीखी दरख्त के नीचे आराम फरमा हैं। इस दरख्त के मुताल्लिक नस्तूर को मसीही रिवायात की रोशनी में इल्म था कि उसके नीचे नबी ही कयाम कर सकता है, चुनान्चे नस्तूर अफत जज्बात में अपनी खानकाह से बाहर आया और मीसरा से रसूलुल्लाह (स०अ०) के बारे में पूछा (नस्तूर राहिब मीसरह को पहले से जानता था, मुमकिन है कि मीसरा हजरत खदीजा के माले तिजारत की निगेहबानी के बतौर पहले भी आते रहे हों) मीसरह ने रसूलुल्लाह (स०अ०) का जामेअ तआरुफ़ कराया और अस्नाए सफ़र खरक़ आदत पेश आने वाले वाक्यात का भी जिक्र किया। नस्तूर ने मालूम किया कि क्या उनकी आंखों में कुछ सुखी भी है? मीसरह ने जवाब दिया: हां! हमेशा रहने वाली सुखी है, यह जवाब सुनकर राहिब ने बरमला इस हकीकत का एतराफ़ किया कि वही है, यही आखिरी नबी हैं, काश मुझे उसका ज़माना नसीब होता। मीसरह के ज़हन व दिमाग़ पर राहिब की यह बातें नक्श हो गयीं।

सफर की थकावट दूर हुई तो काफिला शुगले तिजारत में मशगूल हो गया और आपने कसीर तादाद में माल को बहुत ही कलील मुद्दत में फ़ोख्त कर दिया और आपको गैर मामूली मुनाफा भी हासिल हुआ। उन्हीं अय्याम की बात है कि एक रोज़ बसरा की मन्डी में माले तिजारत फ़रोख्त करते वक़्त किसी शख्स से भाव-ताव में कोई इख़्तिलाफ़ हो गया, जिस पर वह शख्स आग-

बबूला होकर लात व उज़्ज़ा की कसमें खाने लगा और हुज़ूर स०अ० से भी उन झूठे माबूदों की कसमें खाने को कहने लगा, इस पर आप स०अ० ने इन्तिहाई ज़ुरत मन्दाना लहजे में यूं खिताब किया: मैंने उन दोनों की कभी कसम नहीं खाई और मैं उन दोनों के पास से जब भी गुज़रता हूं तो उनको नज़रअंदाज़ कर देता हूं।

रसूलुल्लाह (स०अ०) की मतानत, हक़ गोई व बेबाकी देखकर उस शख्स ने कहा: आप बिल्कुल दुरुस्त बात कहते हैं और हकीकत यह है कि यह बात सिवाए नबी के कोई नहीं कह सकता। कुछ दिनों में जब काफिला अपने मक़सद के हुसूल में पूरी तरह कामयाब हो गया, तो तिजारती काफिले ने मक्का का कूच किया। यहां अहले मक्का इस काफिले की वापसी के शिद्दत से मुन्तज़िर थे। चुनान्चे जब काफिला मक्का पहुंचा तो हजरत अपने बाला खाने से अपनी सहेलियों के साथ इस खूबसूरत मंज़र का नज़ारा कर रही थीं। इसी नज़ारे में उन्होंने एक अनोखा मुशाहिदा यह भी किया कि दो फरिश्ते हैं जो आप स०अ० पर सायाफ़गन हैं हजरत खदीजा ने यह फ़रहतबख़्श मन्ज़र अपनी सहेलियों को भी दिखाया और हर एक यह मंज़र देखकर हैरत में पड़ गया।

रसूलुल्लाह (स०अ०) ने सफर से वापसी में मक्का दाखिल होते ही सीधे हजरत खदीजा के घर का रुख किया और इस सफर में जो गैर मामूली नफा हासिल हुआ था, उस तमाम मुनाफे का हिसाब दिया, फिर अपने घर वापस हुए। हजरत खदीजा रज़ि० को आपका यह नेक अमल और आपकी मेहनत व बरकत से माले तिजारत की मुनाफ़ात बहुत पसंद आयी। जब यह मुबारक सफर ख़त्म हुआ और लोग अपनी-अपनी मंज़िलों पर पहुंच गए तो मीसरह ने अपने जाति मुशाहदात व तासुरात हजरत खदीजा को गोशे गुज़ार कराए। उन्होंने कहा: मैंने सफर के दौरान रसूलुल्लाह (स०अ०) के साथ बहुत से खरके आदत वाक्यात पेश आते देखे। मैंने देखा कि जब रसूलुल्लाह (स०अ०) तेज़ धूप में चलते थे तो दो फरिश्ते आप पर साया फगन हो जाते थे और जब हम बसरा की मंडी में उतरे तो वहां नस्तूर राहिब ने उनके बारे में बड़ी हैरतअंगेज़ बातें बयान कीं और जब हम सामाने तिजारत

फरोख्त कर रहे थे तो रसूलुल्लाह (स०अ०) ने लात व उज्जा की कसम खाने से इनकार कर दिया। यह सुनने के बाद हजरत खदीजा रज़ि० के सामने रसूलुल्लाह (स०अ०) की नाईयत दो-दो चार की तरह वाजेह हो चुकी थी और आप स०अ० की सालिहियत व सलाहियत दिल में घर कर गई थी। चुनान्चे यही असबाब रसूलुल्लाह (स०अ०) के अक्दे अव्वल की तम्हीद साबित हुए। और इसी सफ़रे शाम के चन्द महीनों बाद रसूलुल्लाह (स०अ०) का तारीख़ साज़ अक्द हज़रत खदीजा रज़ि० से हुआ।

हाफ़िज़ इब्ने मन्दा ने एक ज़ईफ़ सनद से रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने बीस साल की उम्र

में हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० के साथ मुल्के शाम का तिजारती सफ़र किया था और इसमें हज़रत अबूबक्र सिद्दीक रज़ि० की बुहैरा राहिब से मुलाकात भी हुई थी, लेकिन यह सफ़र किस नवैयत का था और किसका माले तिजारत साथ था? इसकी कोई तफ़सील नहीं मिलती और न दूसरे असहाबे सैर ने इस सफ़र को अपना मौजू बनाया है। अल्लामा हुबली रह० का इसके बारे में बयान है: मेरी राय है कि इस सफ़र से मुराद वही सफ़र है, जिसमें हज़रत खदीजा के गुलाम मीसरह साथ में थे। इसीलिए हुज़ूर अकरम स०अ० का सफ़रे शाम दो बार से ज़्यादा साबित नहीं है। (सीरतुल हुबलिया: १/१९८)

हज़रत थानवी और वक्त की कद्र

शैख़ हज़रत डाक्टर अब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि अल्लाह तआला उनके दरजात बुलन्द फ़र्माए, आमीन। फ़रमाते हैं कि मैंने खुद हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि को देखा कि मर्जुल मौत में जब बीमार और बिस्तर पर थे और मुआलिजों और डाक्टरों ने मिलने जुलने से माना कर रखा था, और यह भी कह दिया था कि ज़्यादा बात न करें। एक दिन आंखें बन्द करके बिस्तर पर लेटे हुए थे, लेटे लेटे अचानक आंख खोली, और फ़रमाया कि भाई ! मौलवी शफी साहिब को बुलाओ।

चुनांचे बुलाया गया, जब वह तशरीफ़ लाए तो फ़रमाया कि आप अहकामुल कुरआन लिख रहे हैं, मुझे अभी ख़्याल आया कि कुरआने करीम की जो फलां आयत है, उससे फलां मस्अला निकलता है, और यह मस्अला इससे पहले मैंने कहीं नहीं देखा, मैंने आपको इसलिये बता दिया कि जब आप इस आयतपर पहुंचें तो इस मस्अले को भी लिख लीजियेगा। यह कह कर फिर आंखें बन्द करके लेट गए। थोड़ी देर के बाद फिर आंखें खोलीं और फ़रमाया कि फलां शख्स को बुलाओ। जब वह साहिब आ गये तो उनसे मुताल्लिक कुछ काम बता दिया। जब बार बार ऐसा किया तो मौलाना शब्बीर अली

साहिब रहमतुल्लाह अलैहि जो हज़रत की खानकाह के नाज़िम थे, और हज़रत थानवी रहमतुल्लाह अलैहि से बे-तकल्लुफ़ थे, उन्होंने ने हज़रत से फ़रमाया कि हज़रत! डाक्टरों और हकीमों ने बात चीत करने से मना कर रखा है मगर आप लोगों को बार बार बुला कर उनसे बातें करते रहते हैं, खुदा के लिए आप हमारी जान पर तो रहम करें। उनके जवाब में हज़रते वाला ने क्या अजीब जुम्ला इरशाद फ़रमाया। फ़रमाया कि बात तो तुम ठीक कहते हो, लेकिन मैं सोचता हूँ कि ज़िन्दगी वे लम्हे किस काम के जो किसी की खिदमत में खर्च न हों, अगर किसी की खिदमत के अन्दर उमर गुज़र जाए तो यह अल्लाह तआला की नेमत है।

हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि के यहां सुबह से लेकर शाम तक पूरा निजामुल औकात मुकर्रर था, यहां तक कि आपका यह मामूल था कि असर की नमाज़ के बाद अपनी बीवियों के पास तशरीफ़ ले जाते थे। आपकी दो बीवियां थीं। दोनों के पास असर के बाद अदल व इन्साफ़ के साथ उनकी ख़ैर व ख़बर लेने के लिए और उनसे बात चीत करने के लिए जाया करते थे और यह हकीकत में नबी ए करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत थी।

जन्नत के हसीन मनाज़ीर

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: जन्नत नफ़्स के ना-पसन्दीदा चीज़ों के पीछे छुपाई गयी है और दोज़ख़ ख़्वाहिशों और लज़तों के पीछे छुपाई गयी है। (मुस्नद अहमद जिल्द २ पेज १५३) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: जब अल्लाह तआला ने जन्नत और दोज़ख़ को पैदा किया तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजा और फ़रमाया: “तुम जन्नत को देखो, जो नेमतें मैंने उसमे जन्नत वालों के लिए तैयार की हैं उनको देखो। वह आए और जन्नत को देखा और उन नेमतों को जिनको अल्लाह तआला ने जन्नत वालों के लिए तैयार किया था, देखा। अल्लाह तआला के पास लौट गए और अर्ज़ किया: मुझे आपके गुलबे की क़सम ! जो शख्स भी इसका ज़िक्र सुनेगा वह ज़रूर इसमें दाखिल होगा। अल्लाह तआला ने जन्नत को हुक्म किया तो वह (नफ़्स के) ना-पसन्दीदा आमाal (काम) यानी (वे काम जिनके करने से इन्सान के नफ़्स को तकलीफ़ और

परेशानी होती है) मैं छुप गयी। अल्लाह तआला ने (हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम) से फ़रमाया: “अब उसके पास फिर जाओ और उसको देखो और जो कुछ (तकलीफ़ें) उसके रहने वालों के लिए तैयार की गयी हैं उनको देखो।”

हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि जिब्राईल फिर गये (और देखा) तो वह ना-पसन्दीदा कामों में छुपी हुई थी। वह वापस अल्लाह मियाँ के पास लौट आए और अर्ज़ किया: मुझे आपकी इज़्जत की क़सम ! अब तो मैं डरता हूँ कि इसमें कोई एक भी दाखिल नहीं हो सकेगा। अल्लाह तआला ने फ़रमाया: दोज़ख़ की तरफ जाइये और उसको भी (देखिए) उन्होंने उसको देखा और जो कुछ अल्लाह तआला ने दोज़ख़ वालों के लिए तैयार किया था दोज़ख़ में उसको भी देखा, तो वह ऐसी नज़र आई कि उसका एक हिस्सा दूसरे पर बढ़-चढ़ रहा था। यह वापस आए और अर्ज़ किया कि मुझे आपके गुलबे की क़सम ! जो भी इसका ज़िक्र सुनेगा इसमें दाखिल नहीं होगा। अल्लाह तआला ने उसको

हुक्म दिया तो वह इच्छाओं और शहवतों में छुप गयी। फिर जब जिब्राईल ने उसकी तरफ पलटकर देखा तो अर्ज़ किया: मुझे आपके गुलबे की क़सम ! मुझे पक्का डर है कि इससे कोई भी नजात नहीं पा सकेगा, हर एक इसमें दाखिल होगा। (मुस्नद अहमद जिल्द २ पेज ३३२) .

वाकई जन्नत और दोज़ख़ की हालत ऐसी है मगर अल्लाह तआला ने अपने ऐसे हज़रात भी पैदा फ़रमाए हैं जो अल्लाह के फ़ज़ल व तौफ़ीक से जन्नत वाले आमाal करके दोज़ख़ वाले आमाal से बचकर जन्नत में पहुँचेंगे। अल्लाह तआला हम सबको जन्नत में उँचे दर्जे पर फाईज़ (पदासीन) फरमाएँ। आमीन

जन्नत और दोज़ख़ में ज्यादातर कौनसे आमाal जाएँगे

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: सबसे ज़्यादा जो चीज़ इन्सान को दोज़ख़ में ले जाएगी वह दो जोड़ हैं (जो उस चीज़ को कहते हैं जिसके अन्दर खाली जगह हो यानी उसके अन्दर खोखलापन हो) (१) शर्मगाह (२) मुँह। और ज्यादातर जो चीज़ इन्सान को जन्नत में

ले जाएगी वह (१) अल्लाह तआला से तक्वा इख्तियार करना और (२) अच्छे अखलाक का बर्ताव करना है।
(मुस्नद अहमद जिल्द २ पेज ३९२)

यह बात ज़ाहिर है कि दोज़ख में ले जाने वाले जितने काम हैं उनको इनसान आसानी से बगैर किसी मुश्किल के कर लेता है, लेकिन जब किसी नेक काम की बारी आती है तो उसका करना इनसान के सरकश नफ़्स को बहुत नागवार लगता है और सुस्ती और काहिली से भी आदमी अपनी आखिरत को तबाह कर लेता है। अल्लाह तआला दीन पर पूरे तौर पर चलने की तौफ़ीक़ नसीब फरमाए, आमीन।

जन्नत के हक़दार हज़रात की सिफ़ात

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाते हैं: और दौड़ो अपने ख़ब की मग़फ़िरत की तरफ़ और (दौड़ो) जन्नत की तरफ़ (यानी ऐसे नेक काम अपनाओ जिससे परवर्दिगार तुम्हारी मग़फ़िरत कर दे और तुम्हें जन्नत इनायत कर दे। वह जन्नत ऐसी है जिसकी वुस्अत ऐसी है, जैसे सब आसमान व ज़मीन और ज़्यादा का इनकार नहीं। चुनाँचे हकीकत में ज़ायद होना साबित भी है और वह तैयार की गयी है खुदा से डरने वालों के लिए। ये ऐसे लोग हैं जो कि नेक कामों में खर्च करते हैं फ़रागत में भी और तंगी में भी और गुस्से को पी जाने वाले हैं और लागों की गलतियों से दरगुज़र करने वाले हैं, और अल्लाह तआला ऐसे नेकोकारों को महबूब रखता है। और इन ज़िक्र हुए हज़रात के एतिबार से दूसरे दर्जे के मुसलमान ऐसे लोग हैं कि जब कोई ऐसा काम कर गुज़रते हैं। जिसमें दूसरों पर ज़्यादती हो या (कोई गुनाह करके ख़ास) अपनी जात का नुक़सान करते हैं तो फ़ौरन अल्लाह तआला की बड़ाई और अज़ाब को याद कर लेते हैं फिर अपने गुनाहों की माफ़ी माँगते हैं। हक़ वाले बन्दों से भी और अल्लाह तआला से भी और वे लोग अपने बुरे कामों पर जमे नहीं रहते। और वे इन बातों को जानते भी हैं कि हमने फ़लाँ गुनाह किया है उसकी तौबा ज़रूरी है उन लोगों की जज़ा (बदला) बख़िश है उनके ख़ब की तरफ़ से, और जन्नत के ऐसे बाग़ हैं कि उनके दरख़्तों और मकानों के नीचे से नहरें चलती होंगी। वे उनमें हमेशा-हमेशा रहने वाले होंगे, और यह अच्छा इनाम और बदला है। उन काम करने वालों का। वह काम इस्तिग़फ़ार और सही अकीदे का

रखना है, और इस्तिग़फ़ार का नतीजा यह है कि इनसान आईन्दा नेक कामों की पाबन्दी करे, जिसकी तरफ़ आयत के उस टुकड़े से इशारा है जिसमें कहा गया है कि वे अपने बुरे कामों पर जमे नहीं रहते। यानी यह नहीं कि तौबा भी करते रहें और बुरे काम भी बराबर किए जायें, बल्कि तौबा और इस्तिग़फ़ार के बाद यकीनन अच्छे और नेक कामों की ज़्यादा पाबन्दी करते हैं। (सूर: आलि इमरान आयत १३३-१३६)

खुलासा यह कि जन्नत में नेक लोगों का दाखिला होगा जो मोमिन भी हों और मुसलमान भी। जो लोग काफ़िर होने की हालत में मरेंगे वो अपने अच्छे कामों का बदला दुनिया में ही वसूल करके मरेंगे। उनके लिए आखिरत में उनके नेक कामों का कोई अज़्र व सवाब नहीं मिलेगा।

जन्नत दुनिया की तमाम तकलीफें भुला देगी

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: क़यामत के दिन मुसलमानों में से सबसे ज़्यादा दुखियारे को पेश किया जाएगा और उसके लिए हुक़म होगा कि इसको जन्नत में एक बार घुमा दो। चुनाँचे एक बार जन्नत में घुमाया जाएगा। फिर उससे पूछा जाएगा: क्या तूने (दुनिया, कब्र वगैरह में) कभी कोई तकलीफ़ देखी थी? वह (जन्नत को देखने से अपने तमाम दुख तकलीफें भूल जाएगा और) कहेगा, कभी नहीं। जन्नत की नेमत के मुकाबले में मोमिन के दुनियावी दुख कोई हैसियत नहीं रखते।

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम या किसी और नबी ने अर्ज़ किया: ऐ बारी तआला! यह आपकी तरफ़ से क्या है? आपके दोस्त ज़मीन में जाने के ख़ौफ़ में रहते हैं (भूखे रहते हैं) क़त्ल होते हैं, सूली चढ़ाए जाते हैं, उनके हाथ-पाँव काटे जाते हैं, उनको खाने पीने को कुछ नहीं मिलता, और इसी तरह से उनपर बहुत-सी मुसीबतों के पहाड़ टूटते रहते हैं। जबकि आपके दुश्मन ज़मीन पर अमन में हैं, न वे क़त्ल होते हैं, न सूली चढ़ते हैं, न उनके हाथ-पाँव काटे जाते हैं, और जो चाहते हैं खाते हैं और जो चाहते हैं पीते हैं, और इसी तरह दूसरे ऐश व आराम में पलते हैं?

अल्लाह तआला ने जवाब में फ़रमाया: तुम मेरे इस

बन्दे को जन्नत की तरफ ले चलो ताकि यह उन नेमतों को देखे कि उन जैसी कभी नहीं देखी गई। यह सामने चुने हुए आबखोरे (प्याले) देखे, बराबर-बराबर बिछे हुए गालीचे देखे और जगह-जगह फैले हुए मखमल के निहालचे (छोटे-छोटे खूबसूरत बिस्तर और गद्दे) देखे, हूँ को देखे, फलों को देखे, और ऐसे खिदमतगारों को देखे गोया कि वे मोती के दाने हैं गिलाफ़ के अन्दर। फिर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया: जब मेरे बन्दों की आखिरी मन्जिल यह हो उनको दुनिया के दुख क्या तकलीफ़ पहुँचाएँ। फिर अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया अब मेरे इस बन्दे को बाहर से दोज़ख की सैर कराने के लिए ले चलो। तो उसको दोज़ख की तरफ लाया गया। उसके सामने दोज़ख की तरफ से एक गर्दन निकली जिसको देख कर यह बन्दा बेहोश हो गया। फिर जब होश आया तो अल्लाह तआला ने फ़रमाया: जो कुछ मैंने अपने दुश्मनों को दुनिया में दिया है उससे उनको कोई नफा न होगा, जब उनका अन्जाम यह हो। उस अल्लाह के बन्दे ने अर्ज किया बिल्कुल उस काफिर को दुनिया की नेमतों का कोई फायदा नहीं। (सिफ़तुल - जन्नत अबू नुऐम जिल्द १ पेज ६५-६६)

जन्नत की बड़ाई

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला का वास्ता देकर सिर्फ जन्नत का सवाल किया जाए। (हादिल अर्वाह पेज ३५३) अल्लाह तआला की जात इतनी बड़ाई और शान वाली जिसका कोई हद व हिसाब नहीं। उसका वास्ता देकर छोटी-मोटी चीज़ माँगने से हुज़ूर सल्ल० ने मना फ़रमाया है। हाँ! अगर आप उसके वास्ते से सवाल करना है तो फिर उसके वास्ते से जन्नत माँगी जाए। इस हदीस से जन्नत की अज़मत (बड़ाई और शान) का पता चलता है।

नोट: इस हदीस में जो मना किया गया है वह कोई ज़रूरी और वाजिबी हुक्म नहीं। अल्लाह का वास्ता देकर दूसरी नेमतें और अज़ाब से पनाह भी माँगना जायज़ है। (अल्लामा सखावी का क़ौल यही है)।

जन्नत की मामूली-सी झलक भी क्या है ?

हज़रत सअद बिन अबी वक्कास रज़ियल्लाहु अन्हु

से रिवायत है कि जनाब रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: जितना (एक क़तरा) कोई नाखुन (किसी चीज़ में डुबोकर) उठाता है उतना ही जन्नत में ज़ाहिर हो जाए तो उसकी वजह से तमाम आसमान ज़मीन के किनारे जगमगा उठें। (तिर्मिज़ी हदीस २५२८)

एक कोड़े जितना जन्नत का हिस्सा दुनिया और

दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं के जनाब रसूले अकरम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: तुम्हारे कोड़े की मिक़दार (मात्रा) जितना जन्नत का हिस्सा दुनिया और दुनिया की तमाम चीज़ों से बेहतर है। (तिर्मिज़ी हदीस ३२९२)

जन्नत वालों की तलबे जन्नत

जन्नत वाले जन्नत की तलब में अल्लाह तआला से इस तरह दरखास्त करते हैं और करेंगे जैसा कि क़ुरआन में इरशाद है: “ऐ हमारे परवर्दिगार ! और हमको वह चीज़ (जन्नत) भी दीजिए जिसका हमसे अपने पैग़म्बर के ज़रिये से आपने वायदा फ़रमाया है, और हमको क़यामत के दिन रुस्वा न कीजिए। यकीनन आप वायदा खिलाफी नहीं करते। (सूर: अलि इमरान आयत १९३, १९४)

जन्नत तलब करने का इनाम

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: जो मुसलमान भी अल्लाह तआला से तीन बार जन्नत का सवाल करता है तो जन्नत कहती है: ऐ अल्लाह ! उसको जन्नत में दाखिल फ़रमा दीजिए। और जो आदमी अल्लाह के साथ दोज़ख से पनाह पकड़े तीन बार, तो दोज़ख कहती है ऐ अल्लाह ! उसको दोज़ख में पनाह दे दीजिए। (हादिल अर्वाह पेज १२७) हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु की एक हदीस में है: जिसने सात बार यूँ कहा मैं अल्लाह तआला से जन्नत माँगता हूँ तो जन्नत कहती है ऐ अल्लाह ! इसको जन्नत में दाखिल कर दीजिए। (मुस्नद अबू दाऊद)

और एक हदीस अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु से यूँ रिवायत की गयी है कि जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: अल्लाह तआला से जन्नत की तलब

और दोज़ख से पनाह बहुत ज़्यादा माँगा करो क्योंकि ये दोनों (जन्नत और दोज़ख) सिफारिश भी करती हैं। और उनकी सिफारिश क़बूल भी की जाती है। बेशक जब कोई बन्दा अल्लाह तआला से जन्नत को बहुत ज़्यादा तलब करता है तो जन्नत कहती है कि ऐ परवर्दिगार ! आपका यह बन्दा आपसे मुझे तलब कर रहा है आप उसको मुझमें रहन की जगह दे दें। और दोज़ख भी कहती है कि ऐ परवर्दिगार ! तेरा यह बन्दा मुझसे तेरी पनाह माँग रहा है, आप इसको पनाह दे दें। (सिफ़तुल-जन्नत अबू नुएम जिल्द १ पेज ९९)

अल्लाह तआला का तिजारत का सामान बहुत कीमती है

हज़रत अबू हुरैरह रिवायत करते हैं (कि जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया: जिसने आखिरत की मन्जिल से दूर जाने का खौफ़ किया उसने रात को भी इबादत करके आखिरत का सफ़र किया और जिसने रात को सफ़र किया वह अपनी मन्जिल मकसूद तक

पहुँच गया। सुन लो ! अल्लाह तआला का तिजारत का सामान बहुत कीमती है। सुन लो अल्लाह तआला का तिजारत का सामान जन्नत है। (तिर्मिज़ी हदीस २४५०)

जहाँ तक हो सके जन्नत की तलब करो

जनाब कलीब बिन जरीर से रिवायत है कि मैंने जनाबे रसूलुल्लाह सल्ल० को इरशाद फ़रमाते हुए सुना: जन्नत को अपनी पूरी कोशिश करके यानी नेक आमाल के साथ तलब करो और दोज़ख से अपनी पूरी कोशिश के साथ यानी गुनाहों से बचकर भागो। क्योंकि जन्नत के तालिब को सोना यानी लापरवाह होना नहीं चाहिये और दोज़ख से भागने वाले को भी सोना यानी गुनाह के वक़्त दोज़ख को भूलना नहीं चाहिये। बेशक आखिरत जन्नत आज दुनिया में नफ़्स व शैतान की ना-पसन्दीदा चीज़ों पर अमल करने में पोशीदा की गयी है, और दुनिया लज़ज़तों और इच्छाओं का गहवारा है। ख़बरदार ! यह तुम्हें आखिरत से गाफ़िल न कर दे। (हादिल अर्वाह पेज १३०)

तिब्बे नबवी

दुःख और चिंता दूर करने की दुआ

हदीस शरीफ में है कि नबी करीम सल्ल० को जब भी कोई दुःख या चिंता होती तो आप यह दुआ पढ़ा करते थे :

ला इलाह इल्लल्लाहुल करीम० लाइलाह इल्लल्लाहुल अज़ीम वल हलीमु ला इला ह इल्लल्लाहु रब्नुस्समावाति वल अर्ज व रब्बुल अर्शिल करीम०

जामेअ तिर्मिज़ी में है कि जब नबी सल्ल० को कोई मुश्किल पेश आती तो यह पढ़ते थे :

या हैयु या कैयूम बिरहमतिक असतगीस ०

और कुछ रिवायतों में है कि आपने कभी फरमाया कि दुखी आदमी के लिए यह दुआ है :

अल्लाहुम्म विरहमतिक अरजू फला तुकिलनी इला नफसी तुर्फ त अयनिवं व असलिह ली शानी कुल्ल-हु ला इलाहा इल्ला अन्त०

और नबी करीम सल्ल० ने असमा बिनत उमेस रजि० से फरमाया क्या मैं तुमको ऐसा कलिमा सिखा दूँ कि चिंता

व दुःख के समय तुम उसे पढ़ा करो असमा ने अर्ज़ किया सिखा दीजिए ऐ अल्लाह के रसूल सल्ल० ! आपने फरमाया यह दुआ सात बार पढ़ा करो :

अल्लाहु रब्बी ला उशिरकु बिहि शैअन

और इर्शाद फरमाया कि दुआए जुन्नून अर्थात्-

ला इलाह इल्ला अन त सुम्हानक इन्नी कुन्तु मिनज़ालिमीन०

यह हर दुःख व चिंता को दूर करती है आगे नबी करीम सल्ल० ने इर्शाद फरमाया कि जो आदमी इस्तिगफार को पाबन्दी से पढ़े तो अल्लाह तआला उसे भी हर प्रकार की परेशानी व मुसीबत से नजात दिला देता है।

अस्तगफिरुल्लाहल्लजी ला इलाह हुवल हैयुल कयूम व अतुबु इलैह०

नबी करीम सल्ल० ने यह फरमाया कि जिस आदमी को दुःख व परेशानी प्रायः बेरे रहते हों उसके लिए यह इस्तिगफार जन्नत के खजानों में से एक खजाना है।



शौहर की इजाज़त के बग़ैर निकलने पर लानत

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से मरवी है कि मैंने रसूल-ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से सुना, आप सल्ल० फ़रमा रहे थे जब औरत शौहर के घर से शौहर की नाराज़गी में निकलती है तो आसमान के सारे फ़रिश्ते और जिस जगह से गुज़रती है सारी चीज़ें इन्सान और जिन्न के अलावा सब बात करते हैं। जब तक कि वापस न आ जाए। इब्ने अब्बास रज़ि० की एक हदीस में यह है कि अगर औरत शौहर की इजाज़त के बग़ैर निकलती है तो आसमान के फ़रिश्ते, रहमत के फ़रिश्ते, अज़ाब के फ़रिश्ते सब उस पर लानत करते हैं। जब तक कि वह वापस न आ जाए। अल्लाह की पनाह! शौहर को नाराज़ करके यानी लड़ाई झगड़ा करके निकलने या उसकी बग़ैर इजाज़त से निकलने की कैसी सख्त सजा है कि हर चीज़ उस पर लानत करती है। पहली बात तो नाराज़ होना ही दुरुस्त नहीं। अगर किसी वजह से हो गई तो गुस्सा ठंडा होने पर माफी तलाफ़ी करनी चाहिए न कि घर से बाहर मैके वग़ैरह जाना चाहिए। इस तरह इस वर्ड (धमकी) में वह औरत भी दाखिल है जो शौहर के मना करने के बावजूद उसकी ग़ैर हाज़िरी में जाती है। ख़याल रहे कि पड़ोस में जाने से शौहर मना न करता हो तो उसकी मौजूदगी की तरह ग़ैर हाज़िरी भी जा सकती है कि मना न करना गुस्सा न होना इजाज़त के हुक्म में दाखिल है। शौहर को भी चाहिए कि उसे बिल्कुल कैद में न रखे बल्कि पड़ोस में, रिश्तेदारों में जाने दे कि उस में उनके हक्क की अदायगी है जो सवाब की वजह है। बशर्ते कि फ़ितना फ़साद का अंदेशा न हो।

शौहर की इजाज़त के बग़ैर घर से निकलने पर

ख़ुदा के ग़ज़ब (गुस्से) में गिरफ़्तार

हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, जो औरत शौहर के घर से शौहर की इजाज़त के बग़ैर बाहर निकले वह ख़ुदा के ग़ज़ब में गिरफ़्तार रहती है जब तक कि घर वापस न आ जाए या

शौहर उससे राज़ी हो जाए। इससे मालूम हुआ कि ज़रूरत पर भी औरत को शौहर से इजाज़त के बग़ैर घर से निकलना दुरुस्त नहीं। औरत निकाह से पहले माँ-बाप के मातहत और निकाह के बाद शौहर के मातहत हो जाती है। वह अगर आज़ाद रहेगी तो शैतान के ताबे हो जाएगी। आज़ादी शैतान की गुलामी है। कभी कभी इख़्तिलाफ़ और लड़ाई की बुनियाद पर या किसी तकलीफ़ से मुतास्सिर होकर बिला इजाज़त नाराज़ होकर घर से निकलकर मैके या किसी रिश्तेदार के यहाँ चली जाती है। यह मना है, यही ग़ज़बे इलाही की वजह है। माँ बाप को भी चाहिए कि मना करें, शहर की नई तहज़ीब अंग्रेज़ी तालीम याफ़ता औरतों में यह बात होती है। वे शौहरों को अपने बराबर समझती हैं, ख़िदमत और मातहती और बर्दाश्त उनके माहौल में ऐब और बुरा है। ख़ुदा की पनाह! अब शादी के बाद शौहर ही का मुकाम है, ख़ुदा और रसूल सल्ल० के बाद शौहर ही की फ़रमाँबर्दारी है। उसकी इजाज़त के बग़ैर घर से बाहर क़दम उठाना मना है। आज बर्दाश्त करके शौहर की फ़रमाँबर्दारी कर लो, तकलीफ़ और परेशानी भी हो तो सब्र कर लो और घर से बाहर शौहर की जात के बग़ैर क़दम मत निकालो और अल्लाह तआला के फ़राइज पर अमल करती रहो, कल ख़ुदा की रहमत में राहत और मज़े की जिंदगी गुज़ारोगी।

शौहर को तकलीफ़ पहुंचाने वाली औरत पर ज़न्नती

हू की बद्दुआ

हज़रत मुआज रज़ि० नबी ए पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया जो कोई औरत अपने शौहर को दुनिया में परेशान करती है तो उसकी हूरे ईन (ज़न्नती) बीवी उससे कहती है। कि इसे परेशान मत करो, ख़ुदा तुम्हारा भला न करे वह तुम्हारे पास थोड़े ही दिन रहने वाला है। बहुत जल्द तुमसे जुदा होकर हमारे पास चला आएगा। इससे मालूम हुआ

कि औरतों का अपने शौहर को गरीबी की वजह से या इस वजह से कि वह सीधा साधा ज़्यादा चालाक नहीं है या और किसी वजह से उसकी रिआयत और खिमत न करना, या इस वजह से कि जईफ, बीमार, कमज़ोर या बूढ़ा हो गया है। उसके हुक्क की रिआयत न करना, खिदमत में कोताही और ज़रूरत की परवाह न करना, यह अच्छी बात नहीं। ऐसी औरतों पर हूरे ईन की बद्दुआ होती है कि खुदा तुझे रहमत से दूर करे। तुम्हारा शौहर तुम्हारे पास थोड़े दिन का मेहमान है फिर तुमसे जुदा होकर हमारे पास पहुँच जाएगा। (मिर्कात, हिस्सा ६, पेज ४२) ज़्यादा तर औरतों को देखा गया है कि शौहर जब औरत के मुकाबले में किसी ऐतिबार से कमज़ोर होता है, जैसे औरत मालदार घराने की और शौहर गरीब या आखिर उम्र में शौहर जब बूढ़ा, कमज़ोर और कमाने से आजिज़ हो जाता है और घर का गुजर बसर लड़कों पर होता है तो औरत बुढ़ापे में जबकि शौहर को खिदमत व मदद की ज़रूरत होती है तो अपना मुँह फेर लेती है, ऐसी हरकत बहुत बुरी है। वह हूरे ईन की बद्दुआ पाती है, ऐसे वक्त में शौहर की खिमत से जन्नत हासिल करने का वक्त होता है।

किस औरत पर खुदा की रहमत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जो औरत रात को जागे और नमाज़ पढ़े और अपने शौहर को जगाए कि वह भी नमाज़ पढ़े, और अगर वह न उठे तो उसके मुँह पर पानी का छीटा मारे तो ऐसी औरत पर अल्लाह की रहमत ।

मतलब यह है कि ऐसी नेक औरत जो रात को जागने वाली, इबादत करने वाली, तकवे वाली हो कि खुद भी तहज़ुद की नमाज़ पढ़े, खुद भी इबादत, तिलावत का मिज़ाज रखती हो और अपने शौहर को भी इबादत का शौक दिलाती हो। रात में खुद पहले उठ जाती हो, नमाज़ पढ़ती हो, फिर शौहर अगर न उठ सका हो तो उसे उठाती हो कि वह भी नमाज़ पढ़ ले और रात के आखिर वक्त में जो खुदा-ए पाक से करीब होने और मुनाजात का वक्त होता है दरबारे खुदावन्दी में हाज़िर होकर आजिज़ी व इन्किसारी करे, अगर किसी वजह से शौहर न उठ सके तो सिर्फ उठाने की खाना पूरी न करती हो बल्कि उसकी सुस्ती और नींद को करने के लिए पानी का छीटा मारती हो। ऐसी औरत जो शौहर के दीन में मदद की वजह हो, दीन व इबादत की जानिब उसे लाती हो बड़ी मुबारक है। ऐसी औरतें इस ज़माने में बहुत कम हैं। औरतों का मिज़ाज रात की इबादत का कहाँ, आजकल के माहौल में तो फज़ की नमाज़ का पढ़ना ही मुश्किल है। तहज़ुद तो दूर है खास तौर से नई उम्र में ।

याद रखिए! क्यामत के दिन जन्नत और जहन्नम का मामला अजीब होगा। शौहर नेक मुत्तकी है और बीवी फासिका व फाजिरा तो शौहर जन्नत में बीवी जहन्नम में जाएगी, इसी तरह औरत नेक, मुत्तक्री, परहेज़गार और शौहर फासिक, फाजिर (बद-किरदार) तो शौहर जहन्नम में जाएगा और बीवी जन्नत में कुरआन पाक में है: हर इन्सान अपने अमल के बदले में होगा। आज गौर करें कल क्या हाल होगा। (सूर मद्स्सिर, आयत ३८)

शाहीन निजामुद्दीन मुल्ला

७५१७६३८६७५





मुस्तफा वेल्फेअर फाँडेशन

हज और उमराह के लिए किफायत दाम में

ऑनलाईन पासपोर्ट सेवा शुरू

की गई है।

५९८, साऊथ शिवाजी नगर, रिलायंस मार्केट के करीब, सांगली. ४९६ ४९६



मिथाँ बीवी रफ़ीक़ बनें, फ़रीक़ नहीं

दुनियाए इंसानियत की बक्रा और नस्ले इंसानी का वुजूद मर्द और औरत के बाहमी इरतिबात व ताल्लुक से है। यह ताल्लुक जिस कद्र गहरा और मुहब्बत व उत्फ़्त से लबरेज़ होगा, उसी कद्र उसका नतीजा भी बेहतर और नफ़ाबख़्श होगा। इंसान की फ़ितरत अल्लाह तआला ने ऐसी बनाई है कि जब उसे किसी चीज़ से मुहब्बत और उन्स होता है तो उसके देखने और उसके पास रहने से राहत और सुकून महसूस करता है और जिस चीज़ से तबई तौर पर नफ़रत होती है उससे उसको घुटन और तकलीफ़ का एहसास होता है। चुनांचे अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त को दुनिया का निज़ाम और नस्ल इंसानी का वुजूद कियामत तक बाकी रखना मक़सूद है इसलिए मर्द के अंदर औरत की तरफ़ रग़बत व ख़्वाहिश और औरत के अंदर मर्द की तरफ़ तबई मैलान वदीअत फ़रमा दिया है, चुनांचे इंसानी जिंदगी में एक ऐसा वक़्त आता है जब मर्द व औरत दोनों एक-दूसरे के सख़्त मोहताज होते हैं और एक-दूसरे की ज़रूरत बन जाते हैं। अल्लाह तआला ने अपनी आखिरी किताब कुरआन करीम में उस ज़रूरत को निहायत लतीफ़ पैराये में बयान फ़रमाया है, अगर हम सिर्फ़ उस पर गौर करें और उसके मुतालबात को पूरा करने की कोशिश करें तो इंशाअल्लाह हमारी इज़्जदवाजी जिंदगी उतनी ही खुशगवार और इत्मीनानबख़्श होगी जो

हमारा मत्लूब व मक़सूद है।

अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है, “वे तुम्हारे लिए लिबास हैं और तुम उनके लिए लिबास हो।” यहाँ अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने एक-दूसरे की एहतियाज और ज़रूरत को लिबास से ताबीर किया है और फ़रमाया है कि जिस तरह इंसान को हर मौसम में कपड़े की ज़रूरत होती है और उससे ज़ेब व जीनत इख़्तियार करता है, उसी तरह मर्द व औरत को एक-दूसरे की ज़रूरत होती है और कोई भी एक-दूसरे से बेनियाज़ नहीं हो सकता। इसलिए चाहिए कि दोनों एक-दूसरे की ज़रूरत बनकर जिंदगी गुज़ारें न कि एक-दूसरे से बेनियाज़ होकर। कुरआन करीम की इस आयत से यह बात भी मालूम होती है कि जिस तरह लिबास इंसान के जिस्म से जुदा नहीं होता और पूरी जिंदगी उसको लिबास की एहतियाज होती है उसी तरह एक औरत को अपने शौहर के साथ और शौहर को अपनी बीवी के साथ दोस्ताना ताल्लुक कायम रखना चाहिए। इस अंदाज़े फ़िक़््र से एक-दूसरे की कमी को नज़रअंदाज़ करने का जज्बा पैदा होता है।

इसलिए कि मुहब्बत की आँखें ऐब को छुपाती हैं और चश्मपोशी करती हैं। जबकि नफ़रत व अदावत की आँखें बुराइयों की तलाश करती हैं और उसको जाहिर

करती है। लिहाजा फ़ितरी तौर पर अल्लाह तआला ने जौजैन के दिल में एक-दूसरे से मुहब्बत और ज़ब्बए रहमत पैदा फ़रमा दिया ताकि उनकी जिंदगी खुशगवार हो। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, “मर्द को ख़वामख्वाह औरत की ऐबजोई और नापसंदीदगी का इज़हार नहीं करना चाहिए। अगर उसकी कोई आदत बुरी है जो उसे नापसन्द है तो दूसरी आदत और ख़स्लत अच्छी भी होगी जो उसे खुश कर देगी।” (मुस्लिम)

एक दूसरी हदीस में अल्लाह के रसूल सल्ल० ने फ़रमाया कि “औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है। अगर तुम उसे सीधी करना चाहोगे तो उसे तोड़ डालोगे, लिहाजा उसके साथ अच्छा बर्ताव करो तो अच्छी जिंदगी गुज़रेगी।” (इब्ने हिबान) मालूम हुआ कि औरत के साथ रिफ़ाक़त के लिए ज़रूरी है कि उसकी कमज़ोरियों को

नज़रअंदाज़ किया जाए। उसको ज़्यादा सख़्त सुस्त न कहा जाए और उसके साथ खुशगवार जिंदगी गुज़ारने की हर मुमकिन कोशिश की जाए। अगर इस नीयत और इरादे से उसके साथ मामला करेंगे तो इंशाअल्लाह इज़दिवाजी जिंदगी हमेशा खुशगवार होगी।

कुरआन की इस आयत में इस तरफ़ भी इशारा है कि जिस तरह लिबास इंसान के ज़ाहिरी उयूब की पर्दापोशी करता है, मर्द व औरत भी एक दूसरे के लिए लिबास के मानिन्द हैं। उनमें से हर एक को चाहिए कि एक-दूसरे की पर्दापोशी करें। अगर एक तरफ़ अल्लाह और उसके प्यारे रसूल सल्ल० ने मर्दों को ताकीद की है कि वह औरतों के साथ अच्छा सुलूक करें और उनके साथ नर्मी और मुहब्बत से पेश आएँ तो उसके साथ औरतों के लिए भी कुछ फ़राइज़ मुकर्रर फ़रमाए हैं।

शासनाची बाल संगोपन योजना

दर महा ११०० / = रु ज्या मुलांना *आई किंवा वडील नसतील व ज्या मुलांना आई व वडील दोन्ही ही नसतील अशा बालकांना या योजनेचा लाभ मिळतो *० ते १८ वयोगटातील * बालकांना बालसंगोपन योजनेचा लाभ मिळतो.* एका कुटुंबातील दोन किंवा जास्त मुलांना ही लाभ दिला जातो.* किती रक्कम मिळते ? * एका मुलांसाठी ११०० रुपये प्रतिमहिना *(एका वर्षाला १३२००/- रु मिळतात .) वय १८ पूर्ण होई पर्यंत दर महिन्याला रक्कम मिळते

*कोणती कागदपत्रे आवश्यक आहेत... ?

- १)योजने साठी करावयाचा अर्ज व अर्जा सोबत
- २)आधार कार्ड च्या झेराँक्स पालकांचे व बालकांचे
- ३)शाळेचे बोनाफाईड सर्टिफिकेट
- ४)तलाठी यांचा उत्पन्नाचा दाखला.
- ५) पालकांचे मृत्यू नोंदणी प्रमाणपत्र (मृत्यूचा दाखला)
- ६) पालकाचा रहिवासी दाखला
- ७) मुलांचे बँक पासबुक झेराँक्स

८) मृत्यूचा अहवाल.

९) रेशन कार्ड झेराँक्स .

१०) घरा समोर पालका सोबत बालकांचा फोटो. ४ बाय ६ फोटो पोस्ट कार्ड मापाचा फोटो (प्रत्येक मुलासोबत पालकाचा शेफरेट फोटो)

१०)मुलांचे पासपोर्ट फोटो २

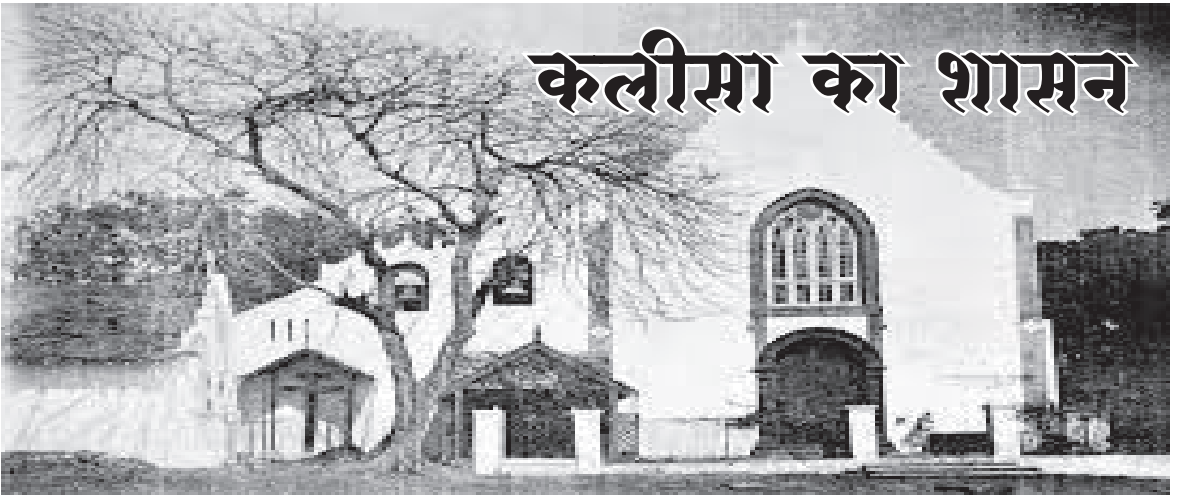
११)पालकाचे पासपोर्ट फोटो

सदर सर्व कागद पत्रांची पूर्तता करुन अर्ज करता येतो .

*ही योजना मंजूर कोण करते ? हा अर्ज मंजूर करण्यासाठी जिल्ह्याच्या ठिकाणी असणारी बाल कल्याण समितीकडे सादर केला जातो व ती समिती अर्ज मंजूर करते.*जिल्हा परिषद शाळेत व महाविद्यालय शाळेत जाणाऱ्या विद्यार्थ्यांनी आपला बोनाफाईट आत्ताच शाळेतून काढून ठेवावा *या योजनेचा लाभ घ्या व १८ वर्षापर्यंत बालकांच्या शिक्षणाच्या खर्चा साठी चिंता मुक्त व्हा.*

* सदर योजना अनेक वर्षा पासुन चालु आहे .पण अनेक पालकांना ही योजना माहीत नाही. *अनेक निराधार ,गरजू बालकांना या योजनेचा लाभ घेता येईल

कलीसा का शासन



कलीसा की दुनियाभर में फैली ताकत व दबदबा और उसके बेपनाह रसूख तथा उसके परिणामस्वरूप प्रजा के हर वर्ग पर जुल्म व अत्याचार की लम्बी दास्तान को समझने से पहले रोमन साम्राज्य के ऐतिहासिक व राजनीतिक परिदृश्य का संक्षिप्त विश्लेषण आवश्यक है। रोमन साम्राज्य का अतीत चार भागों में बटा हुआ है: १-रोमन गणतन्त्र, २-रोमन साम्राज्य, ३-पूर्वी रोमन साम्राज्य, ४- पश्चिमी रोमन साम्राज्य

रोमन गणतन्त्र

रोमन सभ्यता व संस्कृति के प्रथम निर्माता एशिया माइनर के इत्रस्की थे। उन्होंने उत्तरी इटली पर कब्ज़ा किया तथा उद्योग व व्यापार एवं सभ्यता व संस्कृति के मैदान में खूब उन्नति की। शासन की सीमाओं को बढ़ाया और लगभग ढाई सौ साल राज करने बाद ४७४ ई. पू. में वे गुमनामी के पर्दे में छिप गए। इस दौरान इटली की एक जमाअत ज़ज़ीर-ए-मनी के दक्षिणी भाग की नवआबादियों के उत्तर में आबाद हो गई। यह एक पवित्र पहाड़ के चारों ओर बारह कस्बों पर आधारित थे तथा यह लोग लैटिन कहलाते थे। उन नवआबादियों का एक समूह तिबर नदी के किनारे आबाद हुआ जहां ढलवान पहाड़ियां स्थित थीं, जो बहुत बड़ी तो नहीं थीं लेकिन रक्षा हेतु पर्याप्त थीं। इन नवआबादियों को पहले पहल व्यापारियों एवं शरणार्थियों ने आबाद किया था, बाद में यही आबादियां मिलकर शहर-ए-रोम बन गया। शुरुआती समय में रोम पर बादशाहों या सरदारों का

शासन था। बादशाह को अमन व जंग दोनों समय में बड़ा वर्चस्व प्राप्त था। वही सबसे बड़े धार्मिक पेशवा तथा न्यायकर्ता भी होता था। रोमियो ने इस इत्तिदार का नाम इम्पीरियम रखा था। इससे यह समझा जाता था कि वह अमीरों को तलब करके उनसे मशवरा करेगा, तथा जनता की भलाई का ही निर्णय लेगा। उन अमीरों का एक समूह था जो सीनेट कहलाता था। यदि बादशाह अपने अधिकारों का गलत इस्तेमाल करता तो यह समूह उसका विरोध करता। उन अमीरों के नीची प्रजा थी।

छठी सदी ई.पू. के अन्त में रोम पर बाहरी हमले हुए और एक कबीलाई शासक जिसका संबंध इत्रस्की' से किया जाता है, रोम को बर्बाद कर दिया। लूटपाट एवं मारकाट से रोम की बुनियादें हिल गईं। अन्त में रोम निवासी इस विदेशी आक्रमण के खिलाफ उठ खड़े हुए तथा एक कठिन संघर्ष के बाद अपने शहर को स्वतन्त्र कराने में सफल हुए। इस तबाही व बर्बादी ने रोमन बादशाहत का खात्मा कर दिया, परन्तु रोमियों ने अपने रूढ़िवादी स्वभाव के आधार पर शाही इत्तिदार-ए-आला अर्थात् इम्पीरियम' को बाकी रखा, अपितु उसे मज़बूत व सुदृढ़ करने हेतु उसमें कुछ बदलाव कर दिए। अतः बादशाह का सैन्य इत्तिदार दो जजों को दिया गया जो काउन्सिल कहलाते थे। धार्मिक पेशवाई का हिस्सा जो खास बादशाह का था वह एक दूसरे ओहदेदार को दिया गया जो कुर्बानियों का बादशाह कहलाता था। इसके अतिरिक्त बादशाह के न्यायपालिका के अधिकारों

पैट्रों को दिये गए। राज्य के इन सभी ओहदेदारों में सबसे महत्वपूर्ण काउन्सिल का पद था जिसकी अवधि केवल एक साल हुआ करती थी। उनकी नियुक्ति पूरी क्रौम की असेम्बली किया करती थी तथा काउन्सिल अपनी अवधि पूरी करने के बाद असेम्बली के आगे ज़िम्मेदार हुआ करती थी। इस प्रकार रोमियों ने लोकतन्त्र की आधारशिला रखी तथा अपनी स्थिरता एवं भविष्य की सफलता की ओर एक सकारात्मक कदम बढ़ाया।

रोम की प्रजा परिश्रमी, मेहनती तथा स्वतन्त्र कृषक थी, लेकिन साथ ही साथ यह लोग अपने शहर की सेवा तथा उसकी सुरक्षा के लिए, सैन्य व्यवस्था के लिए भी तत्पर एवं कर्मठ थे तथा हर प्रकार की मुसीबत झेलने के लिए हमेशा तैयार रहते थे। अतः तीसरी सदी ई.पू. तक यह छोटी सी हुकूमत इस हद तक सुदृढ़ हो चुकी थी कि वह इटली के बाहर बसने वाली कौमों से टक्कर लेने लगी।

कार्थेज

कार्थेज एक महान सामी सभ्यता थी जो उद्योग व व्यापार में बेजोड़ थी। भूमध्य सागर के किनारे पर जहां अब तिनस स्थित है, उसके महान शहर आबाद थे, जिसकी आबादी दस लाख से भी अधिक थी। रिवायतों के अनुसार शाम (वर्तमान सीरिया) के समुद्री किनारे पर बसने वाले फोनीशियन लोगों ने इसको आबाद किया था। कार्थेज फोनीशियन कनआनियों की एक कॉलोनी थी, यह अन्तिम तथा शायद सबसे पुरानी सामी हुकूमत थी जो पश्चिमी एशिया में स्थापित थी। (द इम्पायर्स ऑफ द वर्ल्ड) कार्थेज रोम का बहुत बड़ा दुश्मन था। उन दोनों के बीच २६४ ई. पू. से १४६ ई. पू. अर्थात एक सदी से अधिक समय तक युद्ध जारी रहा। यह युद्ध प्यूनिक वार्स कहलाता है। रोम के इतिहास का यह महत्वपूर्ण युद्ध कार्थेज की पूरी तरह से तबाही पर समाप्त हुआ, जिसके बाद रोमन साम्राज्य 'भूमध्य सागर' का सबसे बड़ा साम्राज्य बन गया। (रोम एंड कार्थेज)

रोम का फैलाव:

यूनान की सत्ता का जैसे-जैसे पतन होता गया, रोम उसकी जगह लेता गया। २०२ ई.पू. में स्पेन को रोम का राज्य बनाया गया। १४६ ई.पू. अफ्रीका का इलाका साम्राज्य में शामिल किया गया। मकदूनिया तथा यूनान

भी इसी साल रोम के अधीन हो गए। एशिया माइनर तथा दक्षिणी गॉल ११८ ई. पू. में विजयी हुए। इसी साल शाम (सीरिया) भी जीता गया। ६६ ई.पू. से लेकर ६३ ई.पू. में आर्मेनिया में विजय हुई। ५८ ई.पू. से लेकर ४८ ई.पू. में जूलियस सीज़र ने दक्षिणी गॉल (फ्रांस) को रोमन साम्राज्य का हिस्सा बनाया। इसके बाद आगस्टस ने मिस्र तथा डानुबे नदी के क्षेत्रों को साम्राज्य में शामिल किया। आगस्टस के बाद जज़ाएरे बर्तानिया का इल्हाक हुआ जिसे क्लोडिअस ने ४३ ई.पू. में जीता। फिर ९९ ई. में बालाई इराक को भी रोमन साम्राज्य में शामिल कर लिया गया। इस प्रकार पहली शताब्दी के अन्त तक रोमन साम्राज्य दुनिया का महानतम साम्राज्य बन गया जो भूमध्य सागर जुड़े सभी क्षेत्रों पर आधारित था।

रोमन गणराज्य के इतिहास का बड़ा हिस्सा गृहयुद्ध एवं तबकाती कशमकश से भरा हुआ है। स्थिरता के लक्ष्य तक पहुंचने में उसे उतार-चढ़ाव के लम्बे सफ़र से गुज़रना पड़ा। आन्तरिक विद्रोहों को कुचलने तथा बाहरी दुश्मनों से निपटने में तत्पर रोमन बादशाहों ने महान कारनामे किए हैं। उन्हीं शासकों में पोम्पी तथा जोलियस सीज़र को अत्यधिक ख्याति प्राप्त हुई। यह दोनों यद्यपि एक दूसरे के दुश्मन तथा आन्तरिक गृहयुद्धों के ज़िम्मेदार भी थे लेकिन साम्राज्य की सरहदों को दूर तक फैलाने में बेमिसाल जनरल साबित हुए। जूलियस सीज़र अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त शहंशाह था। वह बेहतरीन सेनापति तथा बड़ी-बड़ी मुहिमों को जीतने वाला था। अपनी सभी योजनाओं तथा लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु वह अत्यधिक निरंकुश शासक था। अपने समकक्षों की तुलना में उसने अधिक ख्याति प्राप्त की थी। प्रजा उस पर पूरी तरह से मोहित थी। उनकी जन प्रिय होने का यह आलम था कि रोम के मन्दिर में उसकी मूर्ति लगी थी और उस पर लिखा था: नाकाबिल-ए-तस्खीर खुदा के लिए। जूलियस सीज़र का उद्देश्य रोम को एक महान तथा मज़बूत साम्राज्य बनाना था लेकिन इससे पहले कि वह अपनी योजनाओं को अन्तिम रूप दे सके उसके खिलाफ विद्रोह हुआ तथा वह मारा गया।

‘जबान की नेकियां : सच बोलना

“ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और सच्चाई के साथ रहो।” (सूरह तौबा : १५) इस आयत में दो बातों का हुक्म दिया गया है। खुदा का खौफ और सच्चाई। यह दोनों सिफतें ऐसी हैं, जिस शख्स में पैदा हो जाएं, वह इन्सानियत के कमाल को हासिल कर लेता है और जो उन सिफतों से महरूम हैं, उनमें अदना दर्जे की इन्सानियत नहीं। उन सिफतों के पैदा होने से हर बदअखलाकी, बेहयाई, बदकारी, धोखा, फरेब, जुल्म, रिश्वत, चोरी, गरज कि हर गुनाह व खबासत से आदमी बच जाता है। दूसरों की निगाहों में तो अच्छा और माकूल होता ही है, अल्लाह व रसूल की निगाह में भी उसकी वकअत होती है। उसका अंजाम बेहतर और आक्रिबत खैर होती है। मुबारक है वह दिल जिसमें खुदा का खौफ हो और मुबारक है वह जबान जो सच बोले।

रसूलुल्लाह (स०अ०) सच्चाई पर बहुत ज्यादा जोर देते और तवज्जो दिया करते थे और मिसालों के जरिये समझाया करते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फरमाया: “सच नेकी की तरफ हिदायत करता है, और नेकी जन्नत की तरफ हिदायत करती है। आदमी सच बोलता है यहां तक कि अल्लाह तआला उसको अपने पास सच्चों में लिखता है, और झूठ गुनाहों पर आमादा करता है और गुनाह दोजख की तरफ ले जाते हैं। आदमी झूठ बोलता है, यहां तक कि अल्लाह तआला उसको झूठों में और लागियों में लिख लेता है। (बुखारी)

देखा आपने सच और झूठ का करिश्मा कि सच्ची जबान आदमी को किस बेहतर मक़ाम तक पहुंचा देती है और झूठी और मक्कार जबान किस तारीक और मुसीबत के घर पहुंचाती है।

सच इत्मिनान है:

दूसरी जगह रसूलुल्लाह (स०अ०) का इरशाद है, हज़रत हुसैन (रज़ि०) इब्ने अली (रज़ि०) रिवायत करते हैं कि मुझे रसूलुल्लाह (स०अ०) का फरमान याद है:

“छोड़ दो जो तुमको शक में डाले, और उस चीज़ को अख्तियार करो जिससे तुम्हारे दिल में खटक न पैदा हो, पस बेशक सच इत्मिनान है, और झूठ शक है।” (तिरमिज़ी)

और आगे सुनिये, जिस तरह साफ व पाक, दूध या पानी को एक कतरा गन्दगी गन्दा कर देती है और वह कीमती दूध या पाक पानी, नापाक हो जाता है। इसी तरह थोड़ा सा झूठ सच को ग़ैर माकूल बना देता है। इसलिए हर मुसलमान पर लाज़िम है कि अपनी जबान को सच बोलने से और बोलते रहने से पाक तरह बनाए रखिये और ज़िन्दगी भर इधर तवज्जे रखे कि किसी वक्त भी झूठ न बोले, चाहे मज़ाक में हो या किसी के दबाव में, लालच में हो या ओहदा हासिल करने के शौक में सच सच है। चाहे जब भी या किसी भी मौके पर बोला जाए। झूठ झूठ है, चाहे किसी काम में बोला जाए। हां कुछ मौके ऐसे हैं, जिनमें इजाज़त दी गई है, उनको मालूम करना भी ज़रूरी है, ताकि मौका और मौके की पहचान का इल्म हो जाए।

आठ आयतों का सवाब एक हज़ार आयतों के बराबर

रसूलुल्लाह सल्ल० ने सहाबा किराम रजि० से खिताब करके फ़रमाया कि “क्या तुममें से कोई आदमी इसकी कुदरत नहीं रखता कि हर दिन कुरआन की एक हज़ार आयतें पढ़ा करे?” सहाबा किराम रजि० ने अर्ज किया कि रोज़ाना एक हज़ार आयतें कौन पढ़ सकता है? आप सल्ल० ने फ़रमाया कि “तुममें कोई अलहाकु मुत्तकासुर नहीं पढ़ सकता।” मतलब यह है कि अलहाकु मुत्तकासुर रोज़ाना पढ़ना एक हज़ार आयतों के पढ़ने के बराबर है। (मज़हरी ब हवाला हाकिम व बैहकी अन इब्ने उमर रजि०, मआरिफुल कुरआन ८८१०)

फिरऔन की लाश (रिसर्च)



फिरऔन नाम नहीं बल्कि मिस्र के बादशाहों की उपाधि है। ऐसे लगभग १४ फिरऔन अर्थात् मिस्र के बादशाहों के नाम मिलते हैं। रामसेस महान के उन्नीसवें वंश का तीसरा फिरऔन की लाश पर फ्रांस के इसाई डाक्टर मोरिस बोकाय की रिसर्च के कारण लगातार चर्चा में बना हुआ है। रिसर्च करके उन्होंने माना कि यह वही फिरऔन है जिसकी कुरआन में भविष्यवाणी की गयी थी कि अल्लाह इसकी लाश इबरात के लिए सलामत रखेगा। धर्मग्रंथ के सच्चे होने की एक निशानी यह भी होती है कि उसमें कही गयी बातें देर-सवेर किसी तरह सच साबित होती हैं जैसे की फिरऔन बादशाह की लाश और कुरआन पर हुई रिसर्च के बाद इसाई दुनिया में तहलका मच गया था। स्वयं रिसर्च करने वाला मुसलमान हुआ या नहीं इस बात में शक हो सकता है लेकिन उसके सच बोलना पसंद करने कारण लाखों इसाईयों को इस्लाम की तरफ आने का कारण बना इस बात में कोई शक नहीं। फ्रांस जहां कि आज मुसलमानों की जनसंख्या दूसरे नंबर है इस रिसर्च के बाद फिर इसी डॉक्टर कि पुस्तक से भी इसाई दुनिया इस्लाम की ओर आकर्षित हुई थी। इस रिसर्च के बाद इसाई और यहूदियों ने फिरऔन के अंत को अपनी धार्मिक किताबों में बदलना शुरू कर दिया। झूठा इतिहास तैयार करने का सबूत 'टैंथ कमांडेंट' में फिरऔन को डूबता नहीं बल्कि जंग से महल वापस जाता दिखाया गया है।

थोड़े-थोड़े समय बाद कुरआन अपना ईश्वरीय कलाम होना साबित करता रहा है जैसे इस लेख में जानेंगे

कि फिरऔन का जिस्म और रिसर्च करने वाले डाक्टर ने सच्चाई को समझ कर बाकी जिंदगी कुरआन की सच्चाई से दूसरों को अवगत कराने में बिता दी।

मोरिस बुकाय (जन्म १९२०) फ्रेंच चिकित्सक थे। पेरिस के अस्पताल में सर्जिकल में विशेषज्ञ के रूप में काम करते रहे। प्रतिष्ठा का सबसे बड़ा कारण पुस्तक 'बाइबल कुरआन और विज्ञान है, जिसमें आपने यह साबित किया है कि कुरआन की कोई बात वैज्ञानिक दृष्टिकोण के खिलाफ नहीं है। जबकि बाइबल की कई बातें आधुनिक वैज्ञानिक तथ्यों से गलत साबित होती हैं। यह फ्रेंच किताब बहुत लोकप्रिय हुई और कई उर्दू, इंग्लिश सहित कई भाषाओं में अनुवाद किया गया। इस्लामी दुनिया में किताब बहुत लोकप्रिय हुई और इस रिसर्च को ब्यूकलीजम नाम दिया गया।

फिरऔन की लाश के बाल भी अलग-अलग दिखायी देते हैं अगर यह ममी होती तो तमाम हिस्से पर मेंहदी की तरह हड्डियों को सलामत रखने वाला मसाला लगा होता।

फिरऔन का शरीर फ्रांस में :

फ्रांस के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह पुरातत्व का सबसे अधिक सरपरस्ती करने वाला देश है, जिस समय फ्रांस का प्रधान मंत्री फ्रांसू मीटारान १९८१ में हुआ तो उसने मिस्र से मिस्र के फिरऔन की लाश मांगी ताकि उस पर कुछ चिकित्सा अनुमान किया जाये। अतः फिरऔन की लाश फ्रांस लाई गयी और जिस समय यह लाश फ्रांस के हवाई अड्डा पर विमान से उतरी तो फ्रांस के

प्रधानमंत्री ने उसका इस प्रकार स्वागत किया कि लगता था फिरऔन जिवित है तथा अब भी चीख रहा है। कि मैं तुम सबका सब से बड़ा पालनहार हूँ। अतः शव फ्रांस के पुरातत्व सेन्टर ले जायगा गया ताकि बड़े-बड़े चिकित्सक उसके बारे में रिसर्च करें तथा चिकित्सकों के प्रधान मोरिस बुकाय थे। रिसर्च में मोरिस बुकाय का ध्यान इस पर था कि यह पता लगाया जाये कि इस फिरऔन का देहांत कैसे हुआ है जबकि दूसरे लोग कुछ और ही गवेषणा कर रहे थे। जांच से पता चला कि यह अर्थात् जिसका यह शव है वो रात के अन्तिम समय में जलमग्न हो डूब कर मरा है क्योंकि उसके शरीर पर कुछ समुन्द्री नमक का भाग बाकी था। साथ ही साथ यह भी पता चला कि उसकी लाश डूबने के कुछ ही समय बाद निकाली गयी है। परन्तु आश्चर्य की बात यह है कि दूसरी फिरऔनी लाशों के अलावा इसकी लाश केवल इस प्रकार सुरक्षित क्यों बाकी है जब कि सारी लाशें समुद्र से निकाली गयी हैं?

मोरिस बुकाय सारे रिसर्च की फाइनल रिपोर्ट लिख रहे थे कि अचानक एक आदमी ने उनके कान में चुपके से कहा कि जल्दी न करो मुसलमान लोगों का कहना है कि वह जलमग्न होकर मरा है। परन्तु मोरिस ने इस सूचना को बिल्कुल नकार दिया तथा आश्चर्य में पड़ गए कि इस प्रकार का ज्ञान बड़ी मशीनों से रिसर्च करने के बाद ही हो सकता है। फिर उसी आदमी ने कहा कि वह कुरआन जिस पर मुसलमान विश्वास करते हैं उसमें इसके जलमग्न होने तथा इसकी लाश के सुरक्षित रहने का वर्णन आया है। इस से उनका आश्चर्य और ही बढ़ गया तथा लोगों से पूछने लगे कि यह कैसे हो सकता है? जबकि इस लाश का गवेषणा लगभग दो वर्ष पहले १८९८ में हुआ है जबकि उनका कुरआन १४०० सौ सालों पहले से है। यह बात बुद्धि में कैसे आ सकती है? जब कि केवल अरब ही नहीं बल्कि सारे के सारे मनुष्य कुछ वर्ष पहले मिस्र के पुराने लोग अपने फिरऔनों पर मसाला लगाना जानते हैं।

मोरिस बुकाय पूरी रात बैठ कर ध्यान पूर्वक अपने मित्र की बात को सोचते रहे कि मुसलमानों के कुरआन में डूबने के बाद इस लाश के बचने का वर्णन आया है। जबकि तौरात में यह है कि फिरऔन उस समय डूबा है

जब मूसा भाग रहा था और इस में उसकी लाश के बारे में कोई चर्चा नहीं है। अतः मोरिस अपने दिल में कहने लगे कि क्या यह बात बुद्धि में आने वाली है कि यह मेरे सामने जो लाश है यह वही मिस्र का फिरऔन है जिसने मूसा को भगाया है? तथा क्या यह बात बुद्धि में आने वाली है कि मुसलमानों का मुहम्मद (स०अ०) यह बात एक हजार वर्ष से अधिक पहले जान जाये? और मैं अब जान पाया हूँ।

मोरिस सो न सके तथा तौरात मंगाया और तौरात में पाया कि जल ने फिरऔन की सारी सेना को लपेट लिया और उनमें से कोई न बचा। परन्तु मोरिस को बराबर आश्चर्य रहा कि पूरे तौरात में कहीं भी इसकी लाश के ठीक-ठाक बच जाने का वर्णन नहीं मिलता है। फिरऔन की लाश को चिकित्सा एवं सुधार के बाद फ्रांस ने फिरऔन के वैभव के अनुसार शीशे के ताबूत में भेज दिया। परन्तु मोरिस को उस बात के कारण जो उन्होंने फिरऔन की लाश के बारे में मुसलमानों की ओर से सुना था चैन न आया। इसी कारण सफर की तैयारी करके सउदी अरब में एक चिकित्सा सम्मेलन में भाग लेने के लिये गये जिस में बहुत से मुसलमान शव परीक्षा करने वाले भी भाग ले रहे थे। वहां पर सबसे पहले मोरिस ने फिरऔन की शव के बारे में जो खोज लगाया था उसी का चर्चा किया। तुरंत एक मुसलमान ने कुरआन खोल कर ईश्वरीय वाणी दिखाया: “अतः आज हम तेरे शरीर को बचा लेंगे, ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी हो जाए। निश्चय ही, बहुत-से लोग हमारी निशानियों के प्रति असावधान ही रहते हैं।” (कुरआन-१०:९२)

कुरआन की इस आयत का मोरिस पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ा तथा दिल में इस प्रकार आवेश पैदा हुआ कि सारे लोगों के सामने खड़े होकर निसंकोच हो कर घोषणा कर दिया कि मैंने इस्लाम धर्म स्वीकार कर लिया तथा इस कुरआन पर विश्वास कर लिया। मोरिस फ्रांस से वापस आये तथा लगभग दस वर्ष तक बिना किसी दूसरे कार्य के इस रिसर्च में लग गये कि आज के समय के नए वैज्ञानिक सिद्धांत एवं अनुसाधान कुरआन से कितना मेल खाते हैं। ताकि कुरआन की इस आयत का परिणाम उन्हें मिल सके।

“अब ये अत्याचारी जो कुछ कर रहे हैं, उससे अल्लाह को असावधान न समझो। वह तो इन्हें बस उस दिन तक के लिए टाल रहा है जबकि आँखे फटी की फटी रह जाएँगी।” (कुरआन – १४:४२)

कुछ ही वर्षों के बाद मोरिस ने फ्रांस में कुरआन के बारे में एक पुस्तक लिखी जिस से पूरे पश्चिमी देश तथा पश्चिमी वैज्ञानिकों को हिला दिया। इस पुस्तक का नाम था: “कुरआन, तौरात इन्जील एवं ज्ञान नये मर्म के अनुसार पवित्र पुस्तकों पर रिसर्च – कुरआन और नया चैलेंज।”

इस पुस्तक ने क्या किया? जैसे ही पहली बार छपी सारी दुकानों से तुरंत समाप्त हो गयी। फिर फ्रांसिसी

भाषा से अरबी, इंग्लिश, इन्डोनेसी, फारसी, तुर्की, उर्दू, गुजराती, अलमानी आदि भाषा में अनुवाद होकर पुनः छापी गयी ताकि पूरब से पश्चिम तक सारे पुस्तकालय में उपलब्ध हो जाये। यहां यह बात भी याद रहे कि मोरिस की इस पुस्तक पर यहूदी और ईसाई धर्म के सारे वैज्ञानिकों ने खण्डन करने तथा उत्तर देने के प्रयास किया परन्तु किसी ने भी कोई ढंग की पुस्तक न लिखी दाये बायें बहुत चक्कर लगाया परन्तु कोई विशेष बात न लिख सके। इससे आश्चर्य की बात यह है कि अरब इलाके के कुछ ईसाई एवं यहूदी वैज्ञानिक ने भी खण्डन करने का प्रयास किया परन्तु जब मोरिस की पुस्तक को ध्यान पूर्वक पढ़ने लगे तो मुसलमान हो गये।

करिअर नामा

हम सभी जानते हैं कि महाराष्ट्र पुलिस भर्ती २०२२ जिलेवार विज्ञापन उपलब्ध हैं और इस १७१३० पदों पर पुलिस भर्ती के लिए फॉर्म भरने की अंतिम तिथि ३० नवंबर है। अल्पसंख्यक समुदाय के इच्छुक और जरूरतमंद उम्मीदवारों को इस भर्ती के माध्यम से महाराष्ट्र पुलिस सेवा में शामिल होने का सुनहरा अवसर मिला है। यदि हम सभी मिलकर प्रयास करें तो इस पुलिस भर्ती के माध्यम से अल्पसंख्यक समुदाय के अधिक से अधिक उम्मीदवार महाराष्ट्र पुलिस सेवा में शामिल हो सकते हैं। इसके लिए मुख्य रूप से और प्रयास अपेक्षित हैं १) अपने इलाके, तालुका और जिले में योग्य उम्मीदवारों की सूची तैयार करना। २) पुलिस भर्ती फॉर्म भरने के लिए उम्मीदवारों को आवश्यक दस्तावेज प्राप्त करने में मदद करना। ३) ३० नवंबर तक अभ्यर्थियों का फॉर्म भरना। ४) उम्मीदवारों को भर्ती पूर्व प्रशिक्षण और मार्गदर्शन प्रदान करना। ५) जरूरतमंद अभ्यर्थियों को आर्थिक सहायता। ऐसे में अगर हम अपने पास कम से कम पांच उम्मीदवारों को सुविधा दे दें तो ईशाअल्लाह पुलिस भर्ती में अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व निश्चित रूप से बढ़ जाएगा। पुलिस के १७,१३० पदों पर भर्ती

<https://mahabharti.in/mumbai-police-bharti-2022/>

मुंबई रेलवे पोलीस भरती 2022 – 620 पदे

<https://mahabharti.in/mumbai-railway-police-bharti-2022/>

पुणे पोलीस भरती 2022 – 795 पदे

<https://mahabharti.in/pune-police-bharti-2022/>

पुणे ग्रामीण पोलीस भरती 2022 – 669 पदे

<https://mahabharti.in/pune-gramin-police-bharti-2022/>

ठाणे पोलीस भरती 2022 – 521 पदे

<https://mahabharti.in/thane-police-bharti-2022/>

ठाणे ग्रामीण पोलीस भरती 2022 – 116 पदे

<https://mahabharti.in/thane-rural-police-bharti-2022/>

पपिरी चचिवड पोलीस भरती 2022 – 216 पदे

<https://mahabharti.in/pcmc-police-bharti-2022/>

मीरा भाईंदर पोलीस भरती 2022 – 996 पदे

<https://mahabharti.in/mira-bhayandar-police-bharti-2022/>

नागपूर पोलीस भरती 2022 – 429 पदे

<https://mahabharti.in/nagpur-police-bharti-2022/>

नागपूर ग्रामीण पोलीस वभिगात 179 पदांची भरती

<https://mahabharti.in/nagpur-gramin-police-bharti-2022/>

नागपूर रेलवे पोलीस भरती 2022 – 28 पदे

<https://mahabharti.in/nagpur-railway-police-bharti-2022/>

नवी मुंबई पोलीस भरती 2022 – 204 पदे

<https://mahabharti.in/navi-mumbai-police-bharti-2022/>

औरंगाबाद ग्रामीण पोलीस दलात शपिर्इ पदाच्या 39 जागा रक्ति

<https://mahabharti.in/aurangabad-gramin-police-bharti-2022/>

अमरावती पोलीस भरती 2022 – 41 पदे

<https://mahabharti.in/amravati-police-bharti-2022/> (बाकी पेज नं २१ पर)



उश्र क्या है ?

जिस तरह सोना, चांदी, अमवाले तिजारत और नकदी पर ज़कात वाजिब है, उसी तरह ज़मीन की पैदावार पर भी ज़कात वाजिब है और चूंकि ज़मीन पर होने वाली पैदावार पर वाजिब होने वाली ज़कात उश्र (दसवां हिस्सा) या निरफ़ उश्र (बीसवां हिस्सा) होती है, इसलिए इसका नाम ही उश्र रख दिया गया है। फिर जिस तरह ज़कात फ़र्ज है, उसी तरह उश्र भी फ़र्ज है, इसका हुक्म कुरआन मजीद में भी आया है और हदीसों में भी आया है, चुनान्वे अल्लाह तआला का इरशाद है: “ऐ ईमान वालों खर्च करो अपनी पाकीज़ा कमाई में से और उस पैदावार में से जो हमने तुम्हारे लिए ज़मीन से निकाली है।” (सूरह बकरा: २६७८)

मुफ़स्सिरीन ने इससे उश्र मुराद लिया है। दूसरी जगह इरशाद है “और फसल काटते वक़्त उसका हक़ दो।” (अलइनाम: १४१) यहां भी मुफ़स्सिरीन ने उश्र या निरफ़ उश्र मुराद लिया है और रसूलुल्लाह (स०अ०व०) का इरशाद है “जो ज़मीन बारिश और चश्मों से सैराब हो या (जड़ों के ज़रिए खुद से) सैराबी हासिल कर लेती हो उसमें उश्र (दसवां हिस्सा) वाजिब है और जो ऊंट (या दूसरे मस्नूई ज़राए जैसे ट्यूबवेल वगैरह के ज़रिये सींची जाए तो उसमें निरफ़ उश्र (बीसवां हिस्सा) है। (बुखारी, किताबुज़्ज़कात १४८३)

किस ज़मीन में ऊश्र होगा ?

उश्र सिर्फ़ उश्री ज़मीन पर वाजिब होता है, ख़राजी ज़मीन पर वाजिब नहीं होता, उश्री उन ज़मीनों को कहा

जाता है जो मुसलमानों ने काफ़िरों से फतेह करके हासिल की हो और उसे बतौर माले गनीमत तकसीम कर दिया गया हो, या मुसलमान हाकिमों ने बतौर जागीर दी हो और उस वक़्त से अब तक मुसलमानों के कब्ज़ों में चली आ रही हो। चुनान्वे ख़राजी ज़मीनों पर उश्र नहीं होता और ख़राजी ज़मीनें वह हैं जिनको मुसलमानों ने फतेह करके हासिल तो किया हो लेकिन उनको बतौर एहसान मालिकों के पास ख़िराज मुकर्रर करके छोड़ दिया हो, या वह ज़मीन जिसको मुसलमान ने काफ़िर से ख़रीदा हो। (फ़तावा खानिया: १ / २७०-२७१)

इस ज़मीन को मुसलमान काफ़िर से ख़रीद भी ले तब भी इस पर उश्र वाजिब नहीं होता। (तातार खानियाँ: ७/१३२) जहां तक हिन्दुस्तान की ज़मीनों की हैसियत का ताल्लुक है तो बाज़ उल्मा सबको ख़िराजी करार देते हैं, इसलिए कि खात्माए ज़मीनदारी के बाद हुक्मत ने ज़मीन ज़मीनदारों से जब्त कर ली थी और काश्तकारों व ज़मीनदारों पर तकसीम कर दी थी, लिहाजा वह काफ़िरों से हासिल होने वाली ज़मीन के हुक्म में गई है। और उस पर न उश्र लाज़िम होगा न ख़िराज, इसलिए कि सरकारी मिल्कियत वाली ज़मीनों में से कोई भी चीज़ वाजिब नहीं होती। (किताबुल मसाएल: २ / १६६, बहवाला फ़तावा महमूदिया व शामी)

लेकिन हज़रत थानवी (रह०), मुफ़्ती शफीअ (रह०), मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह और जम्हूर उल्मा के नजदीक जो ज़मीनें काफ़िरों से ख़रीदी जाएं उन पर

खिराज वाजिब है, बकिया मुसलमानों की तमाम ज़मीनों पर उश्र वाजिब है, बल्कि एहतियात इसमें है कि गैर मुस्लिमों से खरीदी गई ज़मीनों का भी उश्र निकाल दिया जाए। फिक एकेडमी की चन्द तजावीज़ (छठा फिकही सेमिनार) मुलाहिजा हो

१- हिन्दुस्तान की ज़रई ज़मीनों के मुताल्लिक यह ख्याल कि न उनमें उश्र वाजिब है न खिराज, दुरुस्त नहीं है।

२- हिन्दुस्तान की ज़मीनें नीचे दी गई सूरतों में इत्तिफाक राय से उश्री हैं:

अ- मुसलमान हुकूमत की तरफ से मुसलमानों को अता की गई ज़मीनें जो अब तक मुसलमानों के पास चली आ रही हैं।

ब- जिस इलाके के लोग मुस्लिम हुकूमत के कायम होने से पहले खुशी से मुसलमान हो गए हों और उनकी ज़मीनें अभी तक मुसलमानों ही के पास चली आ रही हैं।

स- जो ज़मीनें लम्बे अर्से से मुसलमानों के पास हैं। और तारीखी तौर पर उनका खिराजी होना साबित नहीं है।

३- जो ज़मीनें गैरमुस्लिम हुकूमत या अफ़राद से किसी मुसलमान को हासिल हुई हों, उनके बारे में सेमिनार में शरीक होने वालों की राय मुख्तलिफ हैं, बहुत से लोगों के नज़दीक हिन्दुस्तान की तमाम ज़मीनें उश्री हैं और बहुत से लोगों के नज़दीक इस सूरत में खिराज वाजिब है, ताहम इस पर इत्तिफाक है कि इहतियात तमाम ही ज़मीनों में उश्र अदा करने में है। (नए मसाएल: ७२-७३ और देखिए जवाहरल फिकह २ / २६६, जदीद फिकही मसाएल १/२३१, फ़तावा रहीमिया: ९/१११०)

बात का खुलासा यह कि ज़मीन उश्री हो तब तो उश्र निकालना वाजिब है ही, उश्र होना मश्कूक हो या खिराजी होना तय हो तब भी अक्सर उल्मा के नज़दीक एहतियात उश्र निकालने में है। वल्लाहु आलम

किस ज़मीन का दसवां हिस्सा निकालना है

और किसमें बीसवां हिस्सा वाजिब है?

उश्र निकालने के लिए शरीअत ने कोई निसाब तय नहीं किया है, किसी के पास ज़मीन कम हो या ज़्यादा, पैदावार कम हो ज़्यादा ज़मीन का मालिक आकिल-बालिग हो या मजनून और नाबालिग अगर मुसलमान है तो हर तरह की पैदावार पर उश्र वाजिब होगा, सिवाए

घास और सरपत जैसी उन चीज़ों के जिनको नफा हासिल करने के लिए नहीं लगाया जाता, हत्ता कि अगर नफा हासिल करने के लिए सरपत और घास जैसी चीज़ों को लगाया जाए तो उस पर भी उश्र वाजिब होगा, इसलिए अगर नफा हासिल करने के लिए बांस या यूकेलिप्टस के पेड़ लगाए तो भी जब भी उनको काटे उन पर उश्र वाजिब होगा। (शामी: २/५३-५५, बदाए: २/१७३) और सिंचाई अगर बारिश या नदी वगैरह के पानी से बगैर मेहनत किए हो जाती हो तो दसवां हिस्सा (उश्र) वाजिब होगा, लेकिन अगर सिंचाई के लिए रकम लगती हो या मेहनत पड़ती हो जैसे ट्यूबवेल वगैरह से सिंचाई की जा रही हो बीसवां हिस्सा वाजिब होगा यानि आधा उश्र। (शामी: २/५४-५५)

किराए पर दी हुई ज़मीन का उश्र:

किराए पर दी हुई ज़मीन का उश्र मुफ़्ता बिही कौल के मुताबिक किराए पर लेने वाले पर होगा। (शामी: २/६०)

बटाई वाली ज़मीन का उश्र:

अगर बटाई वाली ज़मीन मुसलमान की है और मुसलमान ही ने ली है तो दोनों पर उनके हिस्से में उश्र वाजिब होगा। (बदाए: २/१७४)

आरियत पर ती हुई ज़मीन का उश्र:

अगर ज़मीन किसी मुसलमान को आरियत पर दी तो उसका उश्र आरियत पर लेने वाले किसान पर होगा और अगर किसी गैरमुस्लिम को दी तो पैदावार का उश्र ज़मीन देने वाले पर होगा। (शामी: २/६०)

खर्च घटाए नहीं जाएंगे:

खेती पर खाद और दवाओं पर भारी खर्च आता है, लेकिन उस पर होने वाले इन खर्चों को काटा नहीं जाएगा, कुल पैदावार पर उश्र होगा, इसी तरह गन्ने और सब्ज़ियों वगैरह जैसी तमाम तरह की पैदावार और फलों पर उश्र होता है, उनको लाने-ले जाने पर जो खर्च आता है, उन खर्चों को भी घटाया नहीं जाएगा। (बदाए: २/१८५)

इस्तेमाल से पहले उश्र निकालना ज़रूरी है:

पैदावार में उश्र निकालने से पहले उश्र निकालना चाहिए और अगर बेच लिया है तो उसकी कीमत से पहले उश्र निकाले फिर इस्तेमाल करे। (शामी: २/५८)

सईद बिन मुसैब (रज़ि०) से रिवायत है कि हजरत आयेशा (रज़ि०) ने कहा: या रसूलुल्लाह ! आप (स०अ०) ने मुनकर व नकीर की आवाज और कब्र के दहाने का मुझसे जिक्र फरमाया, कोई चीज़ मुझको तसल्ली में नाफेअ नहीं होती है। रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फरमाया: " ऐ आयशा ! मुनकर व नकीर की आवाजें मोमिनों के कानों में ऐसी होंगी जैसे सुरमा आंख में (लज्जत बरख्श होता है) और कब्र का फिशार मोमिन के हक में ऐसा राहत बरख्श होगा कि जैसे कोई बेटा मादर-ए-मुशफिका (माँ) से दरदे सर की शिकायत करे और वह उसके सर को नर्म-नर्म दबाए।

सुन लिया आपने! मुनकर व नकीर की वह चीख व डांट जो बड़े मजबूत दिल वालों को हिला कर रख दे और सबको हिला दे, वह मोमिनों के हक में ऐसी राहत बरख्श व लज्जत बरख्श होगी, जैसे कोई आंख में सुरमा लगाकर ठंडक हासिल करता है और कब्र का वह फिशार खुदा दुश्मनों के हक में ऐसा होगा जैसे अंडे पर कोई भारी पत्थर गिराकर उसको चकनाचूर कर दे, वह मोमिन के हक में ऐसा होगा जैसे कोई शफीक मां अपने प्यारे बेटे का सर प्यार व मुहब्बत से दबाती रहे।

क्या खुदा न ख्वास्ता आपको इस बयान में किसी मुबालो, किसी तसन्नो व तकल्लुफ़, किसी शायरी का एहतमाल है? जिस आलम-ए-कब्र को आप इस दर्जा मुहीब व दहशतनाक समझते थे और जिस आलम-ए-बरजरख के नाम से पहले आपके रोंगटे खड़े होते थे, उसका इस दर्जे तशप्फ़ी बरख्श आपने सादिक व मस्टूक रसूल-ए-मकबूल (स०अ०) की जबान से सुन लिया या नहीं? अब भी वह कोई चीज़ वहशत व दहशत की किसी दर्जे में किसी मोमिन के लिए बाकी रह गई है? या

उल्टी वह मकान - ए - राहत व सामान-ए-मसरत व सामान-ए-ऐश हर ईमान वाले के हक में बन गई।

हजरत अबू सईद खुदरी सहाबी (रज़ि०) से रिवायत है रसूलुल्लाह (स०अ०) ने फरमाया कि जब मोमिन बन्दे को दफन किया जाता है, तो कब्र उससे कहती है; खूब आए तुम बहुत खूब आए तुम, तुम तो मुझे महबूब तर ही थे जो मेरी सतह पर चलते थे, तो आज मैं तेरी कार पर दाज़ बना दी गई हूं और तुम मेरे पास आए हो, तो देखना अपने साथ मेरा मामला, फिर हद्दे नज़र तक कब्र उस बन्दे पर फ़राख हो जाती है और उसका दरवाजा जन्नत की तरफ खोल दिया जाता है। और रसूलुल्लाह (स०अ०) ने यह भी फरमाया कि या तो एक बाग़ हो जाती है, जन्नत के बाग़ों में से, या खन्दक हो जाती है, दोजख की खन्दकों में से।

फरमाइये! अब यह वहम मिटा या नहीं कि कब्र तो एक तंग व तारीक गढ़ा होती है, जिसमें लाकर मैय्यत को डाल दिया जाता है और सैंकड़ों मन मिट्टी के नीचे उसे दबा दिया जाता है। कब्र तो मोमिन के हक में कैसा खुशगवार, कितना आरामदेह और किस दर्जा वसीअ व फ़राख दिल बहलाव व गहवारा निकला। और रसूलुल्लाह (स०अ०) ने जब साफ़ फरमा दिया कि मोमिन के हक तो वह जन्नत के बाग़ का एक टुकड़ा हो जाता है और अब वाहिमा की गुंजाइश ही कहां बाकी रह गयी कि कब्र तो लाज़मी तौर पर एक तंग व तारीक कैदखाना ही है।

अफसोस है कि कोई मुहम्मद (स०अ०) का नामलेवा कश्मीर व स्विटज़रलैंड घूमने के ख्याली पुलाव बार-बार पकाता है और ऐसे दिलकश व लाज़वाल, सदाबहार और बेखजा बागीचे की तमन्ना एक बार भी न करे।



मीडिया महज खबर पाने का ज़रिया ही नहीं बल्कि कशमकश का एक बड़ा मैदान भी है। सामराज का आलमी तसल्लुत, तहज़ीबे मगरीब की तश्कील और आलमी मन्डियों पर कब्जे का खेल इसी मीडिया की बिसात पर खेला जाता है। आज हर खबर व इश्तिहार, हर डाक्यूमेन्ट्री और टाक शो, हर फिल्म और ड्रामा समाज पर बराहे रास्त अपना असर छोड़ रहा है। किसी मासूम को संगीन मुजरिम और किसी दरिन्दा सिफ्त को मसीहा साबित करना मीडिया के लिए बिल्कुल आसान है। मीडिया की इस ताकत का अंदाज़ा हमें अब हुआ है जबकि हमारे दुश्मनों ने मीडिया की इस असर ऑफ़ीनी और उसके मुअस्सिर किरदार का इदराक बहुत पहले कर लिया था।

यूरोप व अमरीका ने हमेशा से मुसलमानों को अपना सियासी, दीनी और साफ़ती दुश्मन समझा और उन्हें इस बात का एतराफ भी है कि सिर्फ इस्लाम ही उन्हें बराहे रास्त चैलेंज करता है, क्योंकि मगरीब के मुकाबले यही एक मखसूस तहज़ीब है जिसके वाबस्तगान अपने तमदुन की बरतरी के काएल हैं। यह एक मुख्तलिफ और मुतसादिम तहज़ीब है जिसके पैरोकार अपने मजहब और अपनी तहज़ीब की आफाकियत के दाई हैं और यह यकीन रखते हैं कि उनकी बज़ाहिर ज़वालपज़ीर लेकिन बालातर ताकत यह तकाज़ा करती है कि इस्लामी तमददुन को दुनिया में फैलाया जाए। यही वजह है कि नाइन इलेवेन के ड्रमे के बाद सदर बुश ने अपने खिताब में

खुलकर कहा कि हमारा अस्ल मुकाबला सियासी इस्लाम और इस्लामी बुनियाद परस्ती से है।

इसके वाक्ये के बाद मगरिबी ताकतों ने दुनिया को इस्लामी दहशतगर्दी के उनवान से एक नया मौजू दिया जिस पर आलमी मीडिया ने बहसों का आगाज किया। सियासी बयानात जारी हुए, सच्ची-झूठी खबरें शायी की गई, डाक्यूमेन्ट्रीज़ तैयार हुई, फिल्में बनायीं गयीं और जब इन प्रोपगण्डों की कुछ मुखालिफत हुई तो मीडिया ने अपना जोर कुछ कम कर दिया लेकिन उस वक़्त तक उमूमी ज़हनसाज़ी हो चुकी थी और मश्रिक व मगरिब के दानिशवर भी खुले लफ़्ज़ों में और कभी बन्द जुमलों में यह बात कहने लगे “(हर मुसलमान दहशतगर्द नहीं होता लेकिन हर दहशतगर्द मुसलमान होता है)”

मगरिबी मीडिया के नक्शे कदम पर चलते हुए मुल्की मीडिया ने भी यह प्रोपगण्डा शुरू किया कि कुरआन मजीद में हिन्दुओं को काफिर कहकर उनसे न सिर्फ नफरत का इज़हार किया गया है बल्कि उनके कत्लेआम की इजाज़त भी दी गयी है। इसलिए अस्ल मसला खुद कुरआनी तालीमात का पैदाकरदा है, जिसके नतीजे में तश्द्दुद और इन्तिहा पसंदी का मिज़ाज परवान चढ़ता है। इसलिए ज़रूरत कुरआनी मराकिज़ यानि मदरसों के निज़ाम को तब्दील करने की है, ताकि किसी तालिबे इल्म में जिहाद व किताल का तसव्वुर भी पैदा न हो, चुनान्चे मदरसों के निसाबे तालीम से उन कुरआनी आयात और अहादीस को निसाब से खारिज करने की

मांग की जो जिहाद, हिजाब, यहूदियों की मुस्लिम दुश्मनी और कूपफार से मुहब्बत व दोस्ती की मुखालिफत वगैरह से मुताल्लिक हो।

आपको याद होगा कि जब फरवरी २००२ ई० में जब मौजूदा हुकूमत ही बरसरे इत्तिदार थी तो वज़ीरे आज़म मिस्टर वापजेई ने मदरसों के सर्वे के लिए चार काबीना वज़ीरों की एक कमेटी बनाई थी जिसके निगरां जनाब एल. के. आडवाणी थे, चूंकि यह सर्वे हकीकत से परे महज़ अंदाज़ों और कयासों की बुनियाद पर था इसलिए इस कमेटी ने चौंका देने वाली रिपोर्ट पेश की, जिसमें इस्लामी मदरसों को मुल्क की सालिमियत के लिए खतरा और जुल्मात परस्ती और दहशतगर्दी की तालीमगाह बताया गया था और फिर इलेक्ट्रानिक और प्रिन्ट मीडिया ने बार-बार इन इल्ज़ामात की तशहीर की जिसके नतीजे में दारुल उलूम और नदवतुल उलमा जैसे अज़ीम इदारे भी निशाने पर आ गए थे लेकिन मुल्की सतह पर इसका रद्देअमल जाहिर हुआ तो हुकूमत के तेवर कुछ कम हुए, फिर हुकूमत ने दूसरा तरीका अख्तियार किया और मरकजी मदरसा बोर्ड और 'ग्रान्ट इन ऐड की तजवीज़ पेश की ताकि मदारिस और उनके तालीमी अहदाफ को सरकारी गिरफ्त में लेना और उनका अवामी राबता खत्म करना आसान हो सके जिसका लाज़मी नतीजा इस सूरतेहाल का पैदा होना है। जिसका तजुर्बा हम उन्दुलुस की सरज़मीन में कर चुके हैं। अफसोस कि सूबा यूपी व बिहार में बहुत से मदरसे ग्रान्ट इन ऐड की तलाई जंजीरों में जकड़कर अपनी इफ़ादियत खो चुके।

तक़रीबन बीस साल बाद यूपी हुकूमत ने एक बार फिर मदरसों के सर्वे का सिलसिला शुरू किया, सबसे पहले इन्होंने 'ग्रान्ट इन ऐड मदरसों को निशाना बनाया गया, सख्ती से जांच की गयी, कागजात खंगाले गए. जमीनों की मिल्कियत चेक की गयी इमारतों की जुईयात व तफ़सीलात तलब की गयीं, हर भूला बिसरा कानूनी जाबता नाफिज़ किया गया ऐसी सख्त पकड़ से कानूनी मबादियात से भी नावाकिफ मदरसों का बच पाना कतअन मुमकिन न था, चुनान्चे एक बड़ी तादाद नाअहल करार दे दी गयी, उनकी मंज़ूरियां मन्सूख कर दी गयीं

और बहुत सी इमारतें गैर कानूनी करार देकर ज़मीनबोस कर दी गयीं।

इसके बाद उन मदरसों का सर्वे शुरू हुआ जो हुकूमत से किसी भी ताऊन के बगैर कायम हैं जो हकीकत में इस्लाम के किले और उम्मत मुस्लिमा का पावरहाउस हैं, और यही मराकिज़ बातिल ताकतों के निशानों पर हैं, क्योंकि यहीं से अमन व आशित्ती की सदाए बुलन्द होती हैं और हर उस निज़ाम को चैलेंज करती हैं जो इन्सानों को मुख्तलिफ खानों में बांटता है। सर्वे टीम ने पूरी दिलचस्ती दिखाई, मीडिया भी अलर्ट रहा लेकिन खुदा का फैसला, मदरसे हर तरह की बेकानूनी व बदउनवानी से पाक करार दिये गए, बल्कि बहुत सी गलतफहमिया और मनफी प्रोपगण्डों के इज़ाले का सबब भी बने और दुनिया को एक बार फिर तस्लीम करना पड़ा कि यह वह किले हैं जिनकी बुनियादें मज़बूत और दीवारें आहिनी हैं और इसका निज़ामे तालीम व तरबियत उन अस्ली इदारों से बदर्जहा बेहतर है जिन्हें हुकूमत की सरपरस्ती हासिल है।

सच पूछिए तो यह मदारिसे इस्लामिया ही बातिल ताकतों की राह में रोड़े की तरह अटके हुए हैं। मुसलमानों में दीनी शऊर जगाने वाली यह शमें उन स्याह इरादों की तकमील में बहुत बड़ी रुकावट है। वह जानते हैं कि इन्होंने मदरसों ने हर दौर में ऐसे नामवर काएदीन पैदा किये हैं। जिन्होंने दुनिया की तारीख का धारा बदल दिया है और दीन की हिफाजत का काम ऐसे नाजुक हालात में अंजाम दिया जब हुकूमतें इसके चिराग को अपनी मज़मूम सियासतों से बुझाने में मस्बूफ थीं और अगर कहीं इस्लामी इकदार को ठेस पहुंचायी जा सकी है तो वह भी उन मदारिस की गफलत की वजह से ही मुमकिन हुआ। यही वजह है कि मगरिबी ताकतों ने जहां आम मुसलमानों के खिलाफ खौफ व हरास की फिजा बनाई वहीं मदारिस व अहले मदारिस के खिलाफ खुलकर प्रोपगण्डा किया और अपने मन्सूबों में इस बात की सराहत की कि इस्लाम पसन्द अनासिर पर कदगन लगाकर ही अवाम पर असरअंदाज़ हुआ जा सकता है और इस सिलसिले में मीडिया एक मुअस्सिर और कारगर हथियार के तौर पर इस्तेमाल हो रहा है।

इधर कुछ असों से मदारिसे इस्लामिया ने भी इस तरफ तवज्जो की है, और बहुत से इस्लामी इदारों से मजल्लात व रसाएल और खबरनामे शाए होने लगे हैं जो फिक्रे इस्लामी और मुसलमानों के मसाएल पर मुश्तमिल होते हैं और बाज़ रसाएल में इस्लाम मुखालिफ और रुझानात का इल्मी तजज़िया भी किया जाता है, लेकिन मुझे माफ रखा जाए कि अभी हमारे आलमी इदारे भी इस सिलसिले में इब्तिदाई मराहिल से गुज़र रहे हैं, और कई दहे गुज़रने के बावजूद रसाएल व जराएद के मैदान में कोई काबिले तकलीद मेयार कायम न कर सके, जबकि बाज़ इदारों में मीडिया व सहाफत के शोबे भी कायम हैं लेकिन इन शोबों के ख़ातिरखाह नताएज सामने नहीं आ रहे जिसकी बुनियादी वजह मीडिया के जदीद बसाएल से दूरी

और हमारा वह निज़ामे तालीम है, जिसमें प्रैक्टिकल के बजाए नज़रयाती बहसों पर जोर है। इसलिए ज़रूरत है कि मदरसों का मीडिया से रिश्ता मजबूत हो और खासकर मरकजी मदारिस में मीडिया के तजजिये का शोबा भी कायम हो, जिसमें इलेक्ट्रनिक और प्रिन्ट मीडिया का जाएजा लिया जाए और उसके मनफी नज़रियात का मुहासबा किया जाए, इसके अलावा प्रेस और मीडिया के सामने मदरसों की हकीकत पेश की जाए। अरबाबे मदारिस के इन्टरव्यूज जारी किए जाएं प्रेस कान्फ्रेंस की जाए। इस तरह बहुत मुमकिन है कि मदारिस के सिलसिले में बदगुमानियों का खात्मा हो और मदरसों की मानवियत व इफ़ादियत आशकार हो।

(पेज नं २३ से)

सोलापूर पोलीस भरती 2022 – 171 पदे

<https://mahabharti.in/solapur-police-bharti-2022/>

सोलापूर ग्रामीण पोलीस भरती 2022 – 54 पदे

<https://mahabharti.in/solapur-gramin-police-bharti-2022/>

रायगड पोलीस भरती 2022 – 278 पदे

<https://mahabharti.in/raigad-police-bharti-2022/>

पालघर पोलीस भरती 2022 – 216 पदे

<https://mahabharti.in/palghar-police-bharti-2022/>

नांदेड पोलीस भरती 2022 – 185 पदे

<https://mahabharti.in/nanded-police-bharti-2022/>

संधिदुर्ग पोलीस वभिगात 121 पदांची भरती- अर्ज करा

<https://mahabharti.in/sindhudurg-police-bharti-2022/>

रतनागरी पोलीस वभिगात 131 पोलीस शपिई पदांची नवीन भरती

<https://mahabharti.in/ratnagiri-police-bharti-2022/>

हिंगोली पोलीस वभिग अंतर्गत पोलीस शपिई पदांची भरती

<https://mahabharti.in/hingoli-police-bharti-2022/>

भंडारा पोलीस वभिग अंतर्गत 117 पदांची भरती

<https://mahabharti.in/bhandara-police-bharti-2022/>

चंद्रपूर पोलीस भरती 2022 – 275 पदे

<https://mahabharti.in/chandrapur-police-bharti-2022/>

वर्धा पोलीस भरती 2022 – 126 पदे

<https://mahabharti.in/wardha-police-bharti-2022/>

गडचिरोली पोलीस वभिगात 508 पदांची भरती !

<https://mahabharti.in/gadchiroli-police-bharti-2022/>

गोंदिया पोलीस भरती 2022 – 194 पदे

<https://mahabharti.in/gondia-police-bharti-2022/>

अमरावती ग्रामीण पोलीस भरती 2022 – 197 पदे

<https://mahabharti.in/amravati-rural-police-bharti-2022/>

नाशकि ग्रामीण पोलीस भरती 2022 – 469 पदे

<https://mahabharti.in/nashik-rural-police-bharti-2022/>

अहमदनगर पोलीस भरती 2022 – 139 पदे

<https://mahabharti.in/ahmednagar-police-bharti-2022/>

धुळे पोलीस वभिग नवीन भरती – 42 पदे

<https://mahabharti.in/dhule-police-bharti-2022/>

सातारा पोलीस वभिगात 145 रक्ति पदांची नवीन भरती

<https://mahabharti.in/satara-police-bharti-2022/>

कोल्हापूर पोलीस भरती 2022 – 24 पदे

<https://mahabharti.in/kolhapur-police-bharti-2022/>

परभणी पोलीस भरती प्रकरिया 75 पदांसाठी होणार

<https://mahabharti.in/parbhani-police-bharti-2022/>

वाशीम चालक पोलीस शपिई भरती 2022

<https://mahabharti.in/washim-police-bharti-2022/>

अकोला पोलीस भरती 2022 – 366 पदे

<https://mahabharti.in/akola-police-bharti-2022/>

बुलढाणा पोलीस वभिगात पोलीस शपिई पदांची भरती

<https://mahabharti.in/buldhana-police-bharti-2022/>

पुणे रेल्वे पोलीस भरती 2022 – 124 पदे

<https://mahabharti.in/pune-railway-police-bharti-2022/>

यवतमाळ पोलीस भरती 2022 – 302 पदे

<https://mahabharti.in/yavatmal-police-bharti-2022/>

औरंगाबाद रेल्वे पोलीस भरती 2022 – 154 पदे

<https://mahabharti.in/aurangabad-railway-police-bharti-2022/>

लातूर पोलीस नवीन भरती – 28 पदे

<https://mahabharti.in/latur-police-bharti-2022/>

पोलीस भरती २०२२ ग्राउंड बदल पूरा माहिती !

<https://mahabharti.in/exam/maha-police-bharti-physical-test-details-2022/>

लोकतन्त्र की पीड़ा

पश्चिमी दुनिया एक अक्ल परस्त दुनिया है, जिसे धर्म से कोई सरोकार नहीं है, बल्कि कई एतबार से उसका आधार ही धर्म के विरोध पर स्थापित है। लेकिन इससे भी इनकार नहीं कि जब इन्सान एक वास्तविक धर्म का इनकार करता है तो उसे स्वयं के बनाये हुए दसियों धर्म के सामने सर झुकाना पड़ता है। यूरोप की भी वास्तविकता यही है। धर्म के नाम पर बिदकने वाली इस दुनिया ने अपने लिये बहुत से अक्ली विचारों को धर्म का स्थान दे रखा है। इन्हीं विचारों में एक विचार 'लोकतन्त्र' का भी है। यद्यपि लोकतन्त्र एक ऐतिहासिक व्यवस्था और एक राजनीतिक अनुभव है लेकिन पश्चिम वाले लोकतन्त्र की चर्चा एक आस्था के तौर पर करते हैं। उनके निकट लोकतन्त्र 'पवित्र' भी है और व्यवहारिक मूल्यों के समान भी। यही कारण है कि उसने पूरी दुनिया को लोकतन्त्र और अलोकतन्त्र के खाने में बाँट रखा है। और जब कोई वर्ग लोकतन्त्र की खराबियों का शिकार होता है तो उनकी दृष्टि में उसकी समस्या का हल और अधिक लोकतन्त्र ही है।

पश्चिम में लोकतन्त्र १८वीं सदी में स्थापित हुआ, लेकिन २०वीं सदी में उसे असाधारण सफलता प्राप्त हुई। लोकतन्त्र ने जर्मनी में नाजीवाद को पराजित किया, भारत में अपनी जड़े मजबूत कीं, एशिया और अफ्रीका में नये गणतन्त्रों ने जन्म लिया, यूनान में लोकतन्त्र को १९७४ ई० को सफलता मिली, स्पेन में १९७५ ई० में लोकतन्त्र ने अपना पताका फहराया, अर्जेन्टाइना में १९८३ ई० में लोकतन्त्र को सफलता मिली, ब्राजील में लोकतन्त्र को १९८५ ई० में विजय प्राप्त हुई, चिली में १९८९ ई० लोकतन्त्र ने खिलाफत को पराजित किया। सोवियत यूनियन के खात्मे के बाद बहुत से नये गणतन्त्र अस्तित्व में आये। अतः २००० ई० तक दुनिया के १२० देशों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को परिचित कराया गया। यानि दुनिया के कुल देशों में से ६३ प्रतिशत हिस्से में लोकतन्त्र लागू हो गया।

लोकतान्त्रिक देशों में धनी व निर्धन वर्गों में दूरी कम होती है। जिसके कारण धनी व निर्धन के बीच संघर्ष भी कम होता है। लोकतान्त्रिक देश जंग कम लड़ते हैं और भ्रष्टाचार के मुकाबले में सफल मज़ाहमत ज्यादा संभव होती है। और सबसे अहम बात ये है कि लोकतान्त्रिक देशों में जनता को अपने विचारों को प्रकट करने की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होती है। और वह अपने और अपने आने वाली नस्ल के भविष्य का निर्माण स्वयं कर सकते हैं। यही कारण है कि करोड़ों लोग लोकतन्त्र को गले लगाने के लिये तैयार हैं और आम तौर पर दुनिया में ज़बरदस्त खैर सगाली पायी जाती है।

लोकतन्त्र के संबंध से ये कहा जाता है कि बीसवीं सदी के अन्त में इसे अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई। या यूँ कहिये कि पिछली सभी व्यवस्थाओं के मुकाबले लोकतान्त्रिक व्यवस्था अधिक स्थायी और अधिक चमत्कारी साबित हुई लेकिन इसे केवल एक विचार ही समझा जाना चाहिये क्योंकि वास्तविकता ये है कि दूसरी सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं की तरह ये लोकतान्त्रिक व्यवस्था भी पूरी तरह नाकाम हुई। यद्यपि खिलाफत से लोकतन्त्र तक आने में और फिर लोकतन्त्र की हानियों के प्रकट होने में जो समय लगा निस्बतन थोड़ा लम्बा था और इसी लम्बे अर्से को लोकतन्त्र की सफलता की संज्ञा दी गयी।

इसमें कोई शक नहीं कि लोकतन्त्र को बीसवीं सदी के आखिर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अधिक सफलता मिली फिर भी इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में ही इसके नकारात्मक प्रभाव भी प्रकट होने लगे और पश्चिमी दुनिया २००७-०८ में ज़बरदस्त आर्थिक संकट का शिकार हुई जिसके परिणाम में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को ज़बरदस्त धक्का लगा। और पश्चिम की राजनीति व अर्थव्यवस्था का खोखला पन पूरी तरह से सामने आ गया।

लोकतन्त्र को एक और धक्का अमरीका - इराक

युद्ध से लगा। जार्ज बुश ने ये दावा किया था कि इराक में रसायनिक हथियार मौजूद हैं और उसकी मौजूदगी पूरी दुनिया की शांति के लिये खतरा है। लेकिन इराक की ईट से ईट बजाने के बावजूद ऐसे हथियारों का नाम व निशान तक न मिला। इस तबाही को जार्ज बुश ने लोकतन्त्र की बहाली की संज्ञा दी और खिलाफत से आज़ादी और लोकतन्त्र की मज़बूती को इस जंग के जायज़ होने की बुनियाद बना लिया।

यूरोप के निकट लोकतन्त्र की विशेषता ये है कि मिस्टर बुश ने अपनी राष्ट्रपति होने के दूसरे चरण में कहा था कि आज़ाद कौमों की ओर से लोकतन्त्र के बढ़ावे के लिये की जाने वाली कोशिशें हमारे दुश्मनों की हार का आरम्भबिन्दु हैं। लेकिन ज़ाहिर है कि केवल स्वार्थ और लोकतन्त्र के नाम पर अमरीकी साम्राज्य को मज़बूत करने की कोशिश, जिसका परिणाम ये निकला कि लोकतन्त्र के नाम पर हज़ारों बेगुनाहों को मौत के घाट उतार दिया गया, इज़तें रेंदी गयीं और पूरा देश गृहयुद्ध की भेंट चढ़ गया।

लोकतन्त्र को तीसरा सबसे ज़बरदस्त धक्का मिस्र की क्रान्ति में लगा। २०११ ई० में हुस्नी मुबारक की तानाशाही के खात्मे के बाद लोकतन्त्र की एक नयी किरण पैदा हुई, लोकतन्त्र की बहाली और उसकी मज़बूती के लिये चुनाव कराये गये, लेकिन इतिहास कि चुनाव में किसी धर्मनिरपेक्ष और लिबरल पार्टी के बजाए इस्लाम पसंद पार्टी मुस्लिम ब्रदरहुड को सफलता मिल गयी, पश्चिमी ताकतों ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस्लाम पसंद पार्टी को किसी भी हाल में स्वीकार नहीं किया और लोकतन्त्र का गला घोट कर सैन्य विद्रोह की राह आसान कर दी। नतीजा ज़ाहिर था, ब्रदरहुड को निषेध घोषित कर दिया गया। इसके समर्थकों को सलाखों के पीछे धकेल दिया गया और लोकतान्त्रिक रूप से चुने गये राष्ट्रपति मुहम्मद मुर्सी को कैद कर दिया गया।

लोकतन्त्र का विषय जितना आकर्षक और दिलफरेब है, उसके दामन में उससे कहीं ज़्यादा छेद हैं। देखने में लोकतन्त्र का अर्थ यही है कि जनता के द्वारा, जनता पर जनता का शासन हो। लेकिन जब चुनाव होते

हैं तो मामला उसके बिल्कुल विपरीत होता है। एक अन्दाज़े के अनुसार आम तौर पर साठ प्रतिशत मतदान होता है और वो वोट भी दसियों छोटी-बड़ी पार्टियों में बंट जाता है और जब कोई पार्टी सत्ता में आती है तो उसके खाते में कुल जनता का दस प्रतिशत वोट भी नहीं आता है। यानि नब्बे प्रतिशत का विरोध और दस प्रतिशत का समर्थन पर सत्ता स्थापित हो जाती है। इस पर तरफा ये कि दस प्रतिशत वोट प्राप्त करने वाली पार्टी भी पूंजीवादी कम्पनियों की मरहून मिन्नत होती है।

लोकतन्त्र की असफलता इस बात से भी साफ़ होती है कि अमरीका जैसा लोकतान्त्रिक देश स्वयं 'जमहूरी जमूद का शिकार है। यूं तो अमरीका का दावा दुनिया भर में लोकतान्त्रिक व्यवस्था लागू करना है और उसकी उसने अमली कोशिश भी की लेकिन खुद अमरीका में दो जमाअती सियासी निज़ाम काम कर रहा है, और दोनों जमाअतों ने छोटे से अर्से में अमरीका को दोबारा दिवालिया होने की कगार पर ला दिया है। मशहूर अंग्रेजी मैग्ज़ीन दि इकोनामिस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार उन्नति प्राप्त लोकतान्त्रिक देशों में लोगों में राजनीतिक जुड़ाव तेजी से कम हो रहा है। बिट्टेन में लगभग दो प्रतिशत लोग ही राजनीति से जुड़े हैं जबकि १९५० में ये प्रतिशत बीस प्रतिशत तक था। ४९ विभिन्न देशों में हुए सर्वे के अनुसार १९८०-८४ और २००७-१३ में वोटिंग प्रतिशत में लगभग दस प्रतिशत कमी आयी है। यूरोपीय देशों में की जाने वाली एक खोज के अनुसार दो राय देने वालों में से एक काके शासन पर विश्वास नहीं होता। २०१२ के एक सर्वे के अनुसार ६२ प्रतिशत राय देने वालों की इस बात पर सहमति है कि राजनेता हमेशा झूठ ही बोलते हैं। इस स्थिति का परिणाम ये है कि राजनीतिक पार्टियों का मज़ाक उड़ाना और राजनीतिक व्यवस्था के खिलाफ़ नकारात्मक अन्दाज़ में विरोध करना एक आम सी बात है।

असल बात स्वीकार की जाये तो लोकतन्त्र की कोई अमली या व्यवहारिक आधार नहीं बल्कि दूसरे अनुभवों की तरह वह भी एक अनुभव है जिसके परिणाम में पश्चिम के लोकतान्त्रिक देश राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में बुरी तरह असफल हो चुके हैं।

अच्छे रिश्ते

नाम : आकीब जैनुद्दीन मुल्ला
जन्मतारीख: २८/०६/१९९९
उंची: ५ फूट ८ इंच, रंग: सावला
पढाई: मेकॅनिकल इंजिनियर
काम: मेकॅनिकल इंजिनियर इन फर्ग्युसन
मेस्सी, कराड
बाप का नाम: जैनुद्दीन दिलावर मुल्ला
काम: फोरव्हिलर वर्कशॉप
माँ का नाम: शाहीन मुल्ला(इंग्लिश प्रोफेसर,बार्टी)
बहन: नहीं
भाई: १ (साकीब जैनुद्दीन मुल्ला)
घर का पत्ता: अयोध्या हॉटेल के पिछे,
शास्त्रीनगर, पी.बी. रोड, मलकापूर,
कराड, जि.सातारा
मो: ९८८१२२१३८६

नाम: जमीर जैनुद्दीन पट्टेवाले
उम्र: ३५ साल
उंची: ५ फूट ५ इंच
भाई: १ , शादीशुदा
काम: फॅब्रिकेशन
बाप का नाम: जैनुद्दीन पट्टेवाले
जमीन: १ गुंठा जमीन, खुद का घर
पत्ता: मु.पो. राजापूर, ता. शिरोळ, जि.
कोल्हापूर
मो: ७२७६२५६७२१

नाम : आरजू सलीम इनामदार (कुवॉरी)
जन्मतारीख: ३०/०४/१९९५
उंची: ५ फूट १ इंच, रंग: गोरा
पढाई: बी. फार्मा., एम.बी.ए (मिटकॉन युनि. पुणे)
काम: थेरपी मॅनेजर इन सिप्ला प्रा.लि.
बाप का नाम: म. सलीम मुबारक इनामदार
माँ का नाम: जाहिदा सलीम इनामदार
बहन: नहीं, भाई: नहीं
घर का पत्ता: ५७/१०, कोयना कॉलनी, गांधीनगर,
ता. करवीर, जि. कोल्हापूर
मो: ९८२३८३१७८६

नाम : साहिल शब्बीर नाईकवाडे
जन्मतारीख: १८/१२/१९९५
उंची: ५ फूट ५ इंच,
पढाई: बी. कॉम
काम: कारखाना
बाप का नाम: शब्बीर बाबासो नाईकवाडे
माँ का नाम: रिहाना शब्बीर नाईकवाडे
बहन: एक(शादीशुदा), भाई:१(शादीशुदा)
घर का पत्ता: भगतसिंग चौक, रेंदाळ, ता. हातकणंगले,
जि. कोल्हापूर
मो: ९१५६४०२९८१
९८९०७७६११०

नाम: परवेज आलमगीर मखमल्ला जन्मतारीख: २९/०९/१९९७ पढाई: आय.टी.आय इलेक्ट्रिकल काम: इलेक्ट्रिकल कॉन्ट्रॉक्टर उंची: ५ फूट ९ इंच बाप का नाम: आलमगीर मकबूल मखमल्ला माँ का नाम: आयेशा आलमगीर मखमल्ला भाई: नहीं, बहन: नहीं पता: मु.पो. आलास, ता: शिरोळ, जि. कोल्हापूर मो: ९९२२४६९२०१ ७२४९२१२७९६ रिश्तेदार: फराज, फकीर, जमादार, खतीब, मकानदार, मुजावर	नाम: आसमा अल्ताफ मुल्ला जन्मतारीख: ०६/११/१९९० पढाई: एम.ए, डी.एड, बी.एड, (मराठी) उंची: ५ फूट ५ इंच, रंग: गोरा बाप का नाम: अल्ताफ मुल्ला माँ का नाम: मुमताज अल्ताफ मुल्ला (रिटायर्ड टीचर) भाई: १, असिफ मुल्ला (इंजिनियर) पता: मु.पो. माशाअल्लाह बंगला, हरी स्टेशनरी, अभयनर, सांगली मो: ९८९०९६०१५१ ९०११०१६००६ रिश्तेदार: मुल्ला, मुजावर, शेख, मकानदार, पठाण, जमादार
नाम: सायमा अब्दुल कादर शेख जन्मतारीख: २६/०३/१९९३ उंची: ५ फूट ३ इंच, रंग: गोरा पढाई: डी.एड, बी.एस्सी, बी.एड बाप का नाम: अब्दुल कादर शेख (रिटायर्ड ग. टिचर) माँ का नाम: आसमाँ अब्दुल कादर शेख भाई: १- शादीशुदा, बहन: २- शादीशुदा पता: मु.पो. रूकडी, ता. हातकणंगले, जि. कोल्हापूर मो: ९९२२८०९०२२	नाम: आयेशा अकबर मोमिन मॅरीटल स्टेटस: तलाकशुदा जन्म तारीख: २२/०४/१९९४ उंची: ४ फूट १० इंच, रंग : गोरा पढाई: एम.ए बाप का नाम: अकबर युसूफ मोमिन माँ का नाम: अमीना अकबर मोमिन भाई: १ आदिल अकबर मोमिन पता: भाळवणी, जि. सांगली (३ साल की लडकी) मो: ९७६७१०११९२

(तलाकशुदा)

नाम: इस्माइल अयुब नदाफ

जन्मतारीख: ०१/०७/१९८७

पढाई: १० वी पास (उर्दू)

काम: फरशी कॉन्ट्रैक्टर

उंची: ५ फूट ८ इंच, रंग: मिडीयम

बाप का नाम: अयुब कासीम नदाफ

माँ का नाम: हुशेनमा अयुब नदाफ

बहन: आयेशा अमानुल्ला नदाफ (शादीशुदा)

पता: महावीर नगर, सांगली

मो: ९९६०८०१५८६

४ महिने वक्त लगा है।

नाम: बालेचाँद दस्तगीर बागवान

मॅरीटल स्टेटस: तलाकशुदा

जन्म तारीख: ०२/०४/१९८५

उंची: ५ फूट २ इंच, रंग : गोरा

पढाई: १२ वी (फूट वेअर, अपे रिक्षा)

बाप का नाम: दस्तगीर बागवान

भाई: २ (शादीशुदा)

पता: कुरुंदवाड, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापूर

मो: ८६००८८७१२२

नाम: युनूस महमंद नदाफ

जन्मतारीख: १६/०१/१९९८

पढाई: बी.ए

काम: कन्स्ट्रक्शन बिझनेस

उंची: ६ फूट, रंग: सावला

बाप का नाम: महमंद नदाफ

बहन: ३ बहन, १ शादीशुदा, २ कुवॉरी

पता: गल्ली नं १, हनुमाननगर, सांगली

मो: ९९६०८०१५८६

नाम: आसिफ बशीर मुल्ला

मॅरीटल स्टेटस: कुवॉरा

जन्म तारीख: ०८/०५/१९९९

उंची: ५ फूट ५ इंच, रंग : गोरा

पढाई: १२ वी (होलसेल चिकन सेंटर)

बाप का नाम: बशीर गफूर मुल्ला

माँ का नाम: अप्साना बशीर मुल्ला

भाई: १

पता: भाळवणी, जि. सांगली

मो: ७३८५६००८८१



मुस्तफा मैरिज ब्युरो

अच्छे और बेहतरीन रिश्ते के लिए
इस नंबरपर राबता करे।

मो: ७८४१९३७३९३

बायोडेटा रजिस्ट्रेशन फी २५०